अन्तराशब्दशक्ति

मासिक वेब पत्रिका

दिसंबर 2018

समय साहित्य शीत लहर का
अंतरा शब्द शक्ति सम्मान-2019

विश्व पुस्तक मेला 2019
5 जनवरी से 13 जनवरी तक
हाल 12-ए में आपका अपना अंतरा शब्द शक्ति प्रकाशन

NEW DELHI
WORLD BOOK FAIR

इस अंक के खास आकर्षण

⇨उत्क्रांति के रास्ते हिन्दी युग की स्थापना
⇨वैवाहिक जीवन में बिखराव से बचें
⇨ब्रांडिग के दौर में रचनाकार क्यों रहें पीछे?

www.antrashabdshakti.com

रचनाकारों के लिए सुनहरा अवसर

आदरणीय भाषासारथी,
सादर प्रणाम,
क्या आप मौलिक रुप से हिन्दी में कुछ लेखन करते हैं ? यदि करते हैं तो स्वागत है आपके शब्द शिल्प का।
आइए, हिन्दी भाषा के प्रचार हेतु कार्यरत बेहद क्रियाशील संस्था मातृभाषा उन्नयन संस्थान व हिन्दीग्राम का अंग लोकप्रिय अन्तरताना (वेब पोर्टल) मातृभाषा डॉट कॉम से शीघ्रता से जुड़िए 'मातृभाषा' साहित्य के संप्रेषण के लिए उपलब्ध अनूठा मंच है। साहित्य के इस ऑनलाइन मंच में सभी नवोदित व स्थापित लेखकों का स्वागत है। यदि आप कहानी,लेख,लघुकथा,उपन्यास,नाटक, संस्मरण, निबन्ध, व्यंग्य, डायरी, कविता, आत्मकथा, आलोचना, गजल, समालोचना, मुक्तक, नज्म, गीत या अन्य किसी भी विधा का सिर्फ हिन्दी भाषा में मौलिक लेखन करते हैं तो पोर्टल पर प्रकाशन हेतु हमें उपलब्ध करा सकते हैं। हमारा प्रयास एक मंच पर हिन्दी भाषा के श्रेष्ठ लेखन को जनमानस के लिए उपलब्ध कराना है। हिन्दी साहित्य का प्रचार-प्रसार और एक स्थान पर सभी महत्वपूर्ण विषयों पर सामग्री संकलन हमारा मूल उद्देश्य है, आपकी सहमति मिलने पर इस वैचारिक महाकुंभ में आपके मौलिक लेखन को प्रकाशित कर हम गौरवान्वित महसूस करेंगे 'मातृभाषा' में संकलन के लिए आपकी मौलिक हिन्दी रचनाएँ आमंत्रित हैं।
आपका नवीन लेखन इस अणुडाक (ईमेल) matrubhashaa@gmail.com पर भेजने का कष्ट करें।

साथ ही प्रत्येक सप्ताह के सर्वश्रेष्ठ रचनाकार (आलेख व कविता दोनों विधा में)को प्रति सप्ताह नगद राशि या भेंट से सम्मानित भी किया जाएगा। सप्ताह के श्रेष्ठ रचनाकार का चयन, समिति द्वारा रचना की गुणवत्ता, वर्तनी दोष रहित, ज्यादा से ज्यादा लोगों द्वारा देखी गई होने पर, पटल पर दृश्य संख्या अधिक होने के तथा रचना मातृभाषा.कॉम के अतिरिक्त कहीं और न छपी होगी इन मापदण्डों के आधार पर प्रति सप्ताह किया जाएगा।

जानकारी केवल निम्न बिन्दुओं में ही प्रेषित करें

साहित्यकार के परिचय का प्रारुप

नाम-
साहित्यिक उपनाम-
जन्मतिथि
वर्तमान पता (शहर, जिला, राज्य)
शिक्षा-
कार्यक्षेत्र-
विधा -
मोबाइल/व्हाट्स ऐप -
प्रकाशन-
सम्मान-
ब्लॉग-
अन्य उपलब्धियाँ-
लेखन का उद्देश्य-
एक मौलिक रचना
ईमेल-
छाया चित्र-

प्रथम बार परिचय आवश्यक है, अन्य बार बिना परिचय के केवल रचना मय शीर्षक अणुडाक (मेल) पर प्रेषित करें।

मातृभाषा.कॉम से जुड़े प्रत्येक रचनाकार को मिलेगा भाषा सारथी सम्मान,क्योंकि यदि आप हिन्दीभाषा में सृजन कर रहे है, तो आप निश्चित तौर पर भाषा के गौरव की अभिवृद्धि कर रहे है।

अधिक जानकारी के लिए संपर्क सूत्र

९६६९८९६६९३ ९४२४७६५२५९ ७०६७४५५४५५

www.matrubhashaa.com

मातृभाषा.कॉम

मातृभाषा उन्नयन संस्थान
www.matrubhasha.org

हिन्दीग्राम
www.hindigram.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

साहित्यकार कोश
www.sahityakarkosh.com

अन्तराशब्दशक्ति
मासिक वेब पत्रिका

वर्ष-2 अंक-06 मूल्य-25 रुपए
दिसंबर-2018

प्रधान संपादक
डॉ.प्रीति सुराना *

तकनीकी सज़्पादक
डॉ.अर्पण जैन 'अविचल'

सज़्पादकीय मंडल
श्री समकित सुराना
श्री बृजेश शर्मा 'विफल'
श्री कैलाश बिहारी सिंघल
सुश्री कीर्ति वर्मा
सुश्री पिंकी परुथी 'अनामिका'
सुश्री अदिति रूसिया

ग्राफिज़्स
मृदुल जोशी
सुश्री मीना कौशल

राजकीय प्रतिनिधी
सुश्री नसरीन अली 'निधी'- जज़्मू एवं कश्मीर
रिखभचंद रांका- राजस्थान

***-पीआरबी एज़्ट के तहत खबरों के चयन के लिए उत्तरदायी हैं।**

क्रं.	विषय	पृष्ठ क्रमांक
1.	संपादकीय	4
2.	ब्रांडिंग के दौर में रचनाकार....	5
3.	भारत में हिन्दी को राजभाषा....	6
4.	उत्क्रांति के रास्ते हिन्दी युग...	7
5.	वैवाहिक जीवन में बिखराव...	9
6.	महिलाओं में हारमोन के बदलाव	10
7.	मन को बैलेंस करिए	11
8.	कविता	12
9.	संस्मरण	13-15
10.	यात्रा वृत्तांत	16
11.	लघुकथा-दहेज लोभी	18-19
12.	फिल्म समीक्षा	20
13.	पुस्तक समीक्षा	22
14.	अंतरा शब्द शक्ति सम्मान	24

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक डॉ. प्रीति सुराना द्वारा एस-207, नवीन परिसर, इंदौर प्रेस ज़्लब, एम. जी. रोड इंदौर से प्रकाशित एवं ग्लोबल ग्राफिज़्स ए.बी. रोड, इंदौर से मुद्रित। मो.-9009465259

किसी भी कानूनी विवाद का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा। शुल्क- 25 रु.

www.antrashabdshakti.com

संपादकीय

आपकी पहचान है आपका लेखन

डॉ. प्रीति सुराना
प्रधान संपादक

लिख-लिख भेजूँ चिट्ठीयाँ
मेरे कान्हा तुझे मैं भेजूँ यूँ संदेश,..

सुना तो बहुत पर जिया भी कम नहीं। कितनी ही बातें बोल दो, पर कहते है इ-सौ कहे पर एक लिखा अधिक भारी होता है।इ-

सृजन का मूल सिद्धांत भी यही कहता है कि व्याख्यान पर भारी आपकी पुस्तक या आपका लिखा हुआ सृजन है ।

अकसर देखने में आता है कुछ लोग खुश होते हैं तो गुनगुनाते हैं कुछ लोग दुखी होते हैं तो गाने सुनते हैं। कुछ चित्रकारी करते है कुछ अपने आपको किसी अन्य माध्यम से अभिव्यक्त करते हैं। लेकिन खुद को अभिव्यक्त करने का सबसे प्रासंगिक माध्यम है लेखन।

चाहे पत्र लिख कर प्रेम की अभिव्यक्ति हो, डायरी लिखकर भावों को अभिव्यक्त किया जाए, कविता लिखकर गुनगुनाया जाए, लेख लिखकर सहमति असहमति जताई जाए या अन्य भावों को अभिव्यक्त किया जाए। लेखन किसी भी विधा में , किसी भी अवस्था में या किसी भी भाव में किया जाए मन को सुकून तो देता ही है साथ ही आपके विचारों की धारा भी (सकारात्मक या नकारात्मक) प्रदर्शित करता है।

कुछ लोग जो बातें कह पाने में खुद को असमर्थ पाते हैं लेखन के माध्यम से सबकुछ कह देने की क्षमता रखते हैं।

जीवन में जो कुछ घट रहा है, जो कुछ सहा है, जो सपने पाना चाहते हैं, जो उम्मीदें और आक्रोश है, परिस्थितियों को देखने का नजरिया है या बदलाव के उपाय हैं सब कुछ एक लेखक की शैली को प्रभावित करता है।

हम सभी खुशकिस्मत हैं जो उस युग में जी रहे हैं जिसमें सोशल मीडिया ने बहुत बड़ा मंच दिया है खुद को अभिव्यक्त करने का। व्यर्थ के चुटकुले लिखने, पढ़ने और सुनने से बेहतर है समाधान के रूप में अपनी लेखनी का प्रयोग करते हुए अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का क्योंकि जिस तरह कभी-कभी बड़े-बड़े शस्त्र जो नहीं कर पाते वो काम शास्त्र रुपी एक सुई कर देती है ठीक उसी तरह जो प्रभाव बड़े-बड़े शास्त्र न डाल पाए हैं क्या पता आपका लिखा कोई शब्द या वाक्य किसी के जीवन को दिशा देने के काम आ जाए।

और सबसे महत्वपूर्ण बात, खुद के विचारों को लिख देना एक बहुत अच्छा ध्यान कर्म तो है ही बल्कि अकेलेपन या ऊब जैसी विकट समस्याओं से निपटने का अचूक साधन भी है और यही साधन आपको अभिव्यक्त करने के साथ-साथ आपके व्यक्तिव की पहचान, आपके विचारों का आईना बनकर किसी के लिए प्रेरणा तो बन ही सकता है लेकिन सबसे पहले आपका लेखन आपकी पहचान बनने का दमखम रखता है।

इसलिये यदि आपके पास शब्दों का खजाना और भावनाओं का पिटारा है तो चूकिए मत जुट जाए अपने इस हुनर को तराश कर अपने व्यक्तित्व को नई दिशा और नई पहचान दिलाने के लिए।

इसी के साथ आपकी पहचान को अंतरा शब्द शक्ति प्रकाशन के साथ और समृद्ध करने आ रहा है, विश्व पुस्तक मेला 2019, जिसके हाल 12-ए में आपका अपने प्रकाशन का स्टॉल भी सुरक्षित है।

और हाँ, याद रखना जनवरी की दिनांक 5, वार है-शनिवार, एन.डी. तिवारी भवन, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, दिल्ली। जहाँ होगा अंतरा शब्दशक्ति सम्मान 2019 का भव्य आयोजन.... और इंतजार करेगा पूरा अंतरा परिवार।

आलेख

डॉ.अर्पण जैन
'अविचल'

ब्रांडिग के दौर में रचनाकार क्यों रहें पीछे?

समय की मांग है, जमाना अभिधा का नहीं बल्कि व्यंजना का होता जा रहा है, बाजार का प्रभाव हर क्षेत्र में परवान पर है। ऐसे दौर में साहित्य और लेखन कैसे अछूता रह सकता है। बाजार और बाजारवाद के चलते रचनाधर्मिता को भी प्रचार और प्रसार की आवश्यकता होती है।

लक्ष्य है कि पाठक मिलें, पाठक रचना पढ़े, उनमें जागरुकता का बोध हो, प्रवीणता नज़र आए तो इसके लिए रचनाकार की प्रसिद्धि भी मायने रखती है। आपका लेखन तब पढ़ा जाता है जब आप थोड़े प्रसिद्ध हो, और लिखते भी अच्छा हो और समाधानमूलक भी हो। इसके लिए रचनाकारों को सार्वभौमिक स्वीकार्य मंच यानी सोशल मीडिया या इंटरनेट मीडिया का सही उपयोग करना आना चाहिए। इसके लिए प्रचार-प्रसार बेहतर विकल्प है जिसे विपणन यानी मार्केटिंग की भाषा में 'ब्रांडिग' कहा जाता है।

पहले के उस्ताद इससे दूर रहते थे, तो रचनाओं के मूल तत्व की चोरी भी बहुत होती थी, जैसे हरियाणा के रचनाकार की बेहतरीन कविता किसी ने महाराष्ट्र में पढ़ दी, न पता होने की दशा में वाहवाही भी महाराष्ट्र वाला लूट कर ले गया।

इससे मूल रचनाकार गौण हो गया और रचना तत्व भी। ऐसी स्थिति में रचनाकार की प्रसिद्धि बहुत मायने रखती है।

इसके अतिरिक्त वर्तमान दौर में पाठक उन्ही रचनाकारों को पढ़ता है जो किसी के द्वारा बतौर सलाह बताया जाता है या जो रचनाकार पोस्टर बॉय / गर्ल हो या फिर जिसके नाम की प्रसिद्धि पर्याप्त हो।

मतलब साफ है कि पाठक के मानस पर जगह बनाने के लिए ब्रांडिग का रुख अख्तियार करना एक रचनाकार के लिए कारगार विकल्प है।

रचनाकार की ब्रांडिग के लिए कुछ उपाय है जिन्हें अपनाकर रचनाकार अपनी और अपने लेखन की प्रसिद्धि बना सकता है, जैसे-

1. स्वयं का ब्लाग या निजी वेबसाईट के सहारे लिंक बना कर सही व्हाट्सअप या फेसबुक समूह में प्रेषित करें।

2. अपना फेसबुक पेज बनाएं जिसे शेयर करके /दोस्तों को इनवाईट लिंक भेज कर लाइक करने के लिए प्रेरित करें, उस पर रचनाएं प्रकाशित करें।

3. एन्ड्राईड पर उपलब्ध *picsart* , *yourquote* जैसी एप के माध्यम से अपनी रचनाओं के पोस्टर बनाकर पेज पर, समूह में या ट्वीटर पर भेजें।

4. ज्यादा से ज़्यादा साहित्यिक समूह में जुड़े, समूह के नियमानुसार रचनाएं पोस्ट करें। जितना दिखोंगे उतनी प्रसिद्धि मिलेगी।

5. ब्लाग या वेबसाईट से लिंक गूगल प्लस पर भी साझा करें जिससे SEO में लाभ मिलेगा।

6. अपनी रचनाओं को ज्यादा से ज्यादा साहित्यिक वेबसाईट जैसे मातृभाषा.कॉम, प्रतिलिपी, अमरउजाला, कविताकोश आदि पर प्रेषित करके वहाँ होने वाली प्रकाशिक लिंक को अपने पेज, ब्लाग, वेबसाईट, सोशल समूह में नियमानुसार प्रेषित करें, जिससे आपके पाठकों में भी विश्वसनीयता आएगी और बेकलिंक आपको फायदा देगी।

7. रचनाओं को ज्यादा से ज्यादा पत्र-पत्रिकाओं को प्रेषित करें, जितनें भी लोग प्रकाशित करेंगे उनका लिंक, फोटो सोशल साईट पर साझा करें, यह आपकी पैठ प्रदर्शित करता है।

पर एक बात का ध्यान रखें लोग नहीं प्रकाशित करें तो निराश न हो, समाचार संस्थान की भी अपनी विवशता होती है।

8. अपने शहर के रचनाकारों से जुड़े, गोष्ठी आदि में शामिल हो, इससे आपकी प्रतिष्ठा में अभिवृद्धि होगी।

9. साहित्यिक आयोजनों में शिरकत करते रहें, नज़र आएंगे तो मेलजोल बढ़ेगा और यह भी ब्रांडिग का हिस्सा है।

10. महत्वपूर्ण बात अपना विजिटिंग कार्ड बनवाएं और हर नए मिलने वाले के साथ विजिटिंग कार्ड साझा करें। परिचय का दायरा भी बढ़ेगा।

ब्रांडिग के दौरान क्या न करें

1. व्हाट्सअप /फेसबुक के हर समूह में नहीं बल्कि समूह के नियमानुसार रचना पोस्ट करें।

2. सोशल मीडिया वॉल पर बेवजह की, अभद्र, अशालीन टिप्पणीयों से स्वयं बचें।

3. वरिष्ठ रचनाकारों से सोशल मीडिया के माध्यम से जुड़ें पर अनावश्यक टिका-टिप्पणीयों से बचें।

4. गैर जिम्मेदार, बेतुके, बेहुदा पोस्ट से बचें ।

5. निजी रुप से संबंध सोच समझ कर बनाएं और अपना सलाहकार चुनने में कोताही बरते, सही व्यक्ति को चुनें।

बहुत-सी छोटी-छोटी बातें है जिनका ध्यान रखकर एक रचनाकार अपने आभामण्डल में वृद्धि कर सकता है। ब्रांडिग एक ऐसी संजीवनी है जो आपके लेखन के साथ-साथ व्यक्तित्व को भी सशक्तता प्रदान करती है। यही ब्रांडिग बाद में आपकी पुस्तकों के विक्रय का कारक भी बन सकती है।

आलेख

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

भारत में हिंदी को राजभाषा बनाने की दिशा में यह पहला कदम है

आज मैं इटावा में हूं। उत्तरप्रदेश के इस शहर से मुझे बहुत प्रेम है, क्योंकि यही वह शहर है, जिसके दो स्वतंत्रता सेनानियों ने आज से

50-52 साल पहले मेरी बहुत जमकर मदद की थी। वे थे स्वर्गीय कमांडर अर्जुनसिंह जी भदौरिया और उनकी धर्मपतनी श्रीमती सरलाजी भदौरिया। ये दोनों उस समय सांसद थे। जब अंतरराष्ट्रीय राजनीति का पी.एचडी. का शोधग्रंथ हिंदी में लिखने की मांग करने के कारण मुझे स्कूल ऑफ इंटरनेशनल स्टडीज से निकाल दिया गया था तो संसद में जबर्दस्त हंगामा हुआ। उस समय डॉ. लोहिया, आचार्य कृपलानी, अटलबिहारी वाजपेयी, दीन दयालजी उपाध्याय, डॉ. जाकिर हुसैन, हीरेन मुखर्जी, राजनारायणजी, भागवत झा आजाद, प्रकाशवीर शास्त्री आदि ने मेरा जमकर समर्थन किया लेकिन भदौरिया-दम्पती ने मुझे अपने घर, 216 नार्थ एवेन्यू में शरण दी। उन्होंने मुझे अपनी संतान से भी अधिक प्रेम और सम्मान दिया। उन्होंने प्रधानमंत्री चंद्रशेखरजी, मुलायमसिंहजी और मुझे इटावा बुलाकर सम्मानित किया था।

आज सुबह मैं ग्राम लोहिया गया और माताजी और कमांडर साहब की समाधि पर पुष्प अर्पण किए। मेरी आंखों में आंसू भरे थे। इटावा मैं आया हूं, हिंदी सेवा निधि के वार्षिक कार्यक्रम में। इस निधि की स्थापना न्यायमूर्ति श्री प्रेमशंकर गुप्त ने 26 साल पहले की थी। वे इलाहाबाद उच्च न्यायालय के जज थे। वे ऐसे जज थे, जो अपने फैसले हिंदी में करते थे। हिंदी के प्रति उनकी अगाध निष्ठा का प्रमाण यह है कि उनके दो पुत्र- प्रदीपजी और दिलीपजी- भी वकील के तौर पर अपनी बहस हिंदी में करते है। निधि के समारोहों में अक्सर कई राज्यपाल, कई मुख्य न्यायाधीश, कई मुख्यमंत्री, कई विद्वान, कई साहित्यकार आते रहते हैं।

इस बार भी मंच ऐसे ही लोगों से सुशोभित हुआ है। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के एक सेवा-निवृत्त जज सुधीर अग्रवाल मेरे पास बैठे थे। इन्होंने अयोध्या के राम मंदिर पर भी फैसला दिया था। उन्होंने मेरे एक सुझाव को न्यायिक जामा पहनाया था। सारे मंत्रियों, सांसदों, विधायकों और सरकारी कर्मचारियों और उनके परिजन की शिक्षा और चिकित्सा सरकारी पाठशालाओं और सरकारी अस्पतालों में ही हो, ऐसा एतिहासिक फैसला सुधीरजी ने दिया था।

आज मैंने उप्र विधान सभा के अध्यक्ष पं. हृदयनारायणजी दीक्षित और उप्र के मुख्य न्यायाधीश श्री गोविंद माथुर से निवेदन किया कि वे इस फैसले को लागू करवाएं। हिंदी सेवा निधि के इस भव्य कार्यक्रम में उपस्थित सैकड़ों भद्रलोकीय लोगों से मैंने आग्रह किया कि वे अपने हस्ताक्षर अंग्रेजी में करना बंद करें। लगभग सभी श्रोताओं ने हाथ उठाकर संकल्प किया कि वे अब अपने हस्ताक्षर हिंदी में ही करेंगे। भारत में हिंदी को राजभाषा बनाने की दिशा में यह पहला कदम है। वरिष्ठ विद्वानों ने मुझसे आग्रह किया कि देश में हिंदी आंदोलन चलाने का यह सही समय है। यदि 2019 के लोकसभा चुनाव में यह बड़ा मुद्दा बन जाए तो हम लोग अंग्रेजी को राजभाषा के पद से निकाल बाहर कर सकते हैं।

आलेख

मृदुल जोशी

उत्क्रांति के रास्ते हिन्दी युग की स्थापना

हिन्दी को प्रचार प्रसार की आवश्यकता है, पर किस तरह, यह एक बहुत मूल प्रश्न है । आम तौर पे कोई भी आंदोलन को स्थापित करने के लिए एक विशेष रणनीति की आवश्यकता होती है, किंतु जब किसी माध्यम को स्थापित करना हो, तो वहां रणनीति की अपेक्षा एक स्वस्फुरित प्रसार की आवश्यकता होती है ।

कोई भी स्थापना दो कर्म प्रभाव से संपन्न होती है एक है क्रांति और दूसरी है उत्क्रांति। क्रांति की आवश्यकता एक वर्ग विशेष की विचार स्थापना, समयकाल विशेष तथा परिस्तिथि विशेष के लिए उतपन्न होती है। वर्ग, समय या परिस्थितियों के बदलने पर क्रांति के उद्देश्य का अस्तित्व खत्म हो जाता है और क्रांति अस्तित्वहीन हो जाती है। क्रांति की बारम्बारता नहीं होती है और कतिपय सम्भव भी नहीं। क्रांति में बदलाव बाहर से शुरू हो कर अन्तस् में स्थापित होने का प्रयास करता है और यह केवल प्रयास ही होता है कोई पूर्णकालिक स्थापना नही। अतः क्रांति एक तंत्र की स्थापना कर सकती है लेकिन माध्यम की नही।

उत्क्रांति में बदलाव अंदर से बाहर की और प्रसारित होते है और मूल तत्व में वो एक सूत्र में बंधे होते हैं। बाह्य दर्शन या बाह्य गुणलाभः भले ही एकात्मता के अभाव को प्रसारित करते प्रतीत हों पर अन्तस् में मूलता समानता लिए होती है । जैसे एक कोशीय जीव का बहु कोशीय जीव में परिवर्तन और उनन्यन एक उत्क्रांति का परिणाम है लेकिन भीमकाय जीव जैसे डायनासोर का धरती से समाप्त हो जाना एक क्रांति का परिणाम है जिसका बीज एक उल्कापिंड के धरती पर आने में निहित था।

हिन्दी एक भाषा है, संवाद का माध्यम है और माध्यम की स्थापना क्रांति की अपेक्षा उत्क्रांति से ही सम्भव है । माध्यम में बदलाव नहीं होता है, माध्यम की सिर्फ स्थापना होती है और वो भी एक मूल तत्व को आधार लेकर। हिन्दी के साथ भी यही उत्क्रांति की प्रणाली काम करेगी। भाषा का प्रसार एक ऐसी तकनीकी से करना होगा जो कि किण्वन या खमीरीकरण के सिद्धान्त पर आधारित हो। एक विचार मन मस्तिष्क में हिन्दी प्रेम नामक किण्वन बीज के रूप में स्थापित हो और वो सब हिन्दी न सीखने के कारण को हिन्दी प्रेम में परिवर्तित कर दे। लेकिन ये बहुत सम्भव रूप में एक प्रारम्भिक स्तिथि में क्रान्ति जैसी प्रक्रिया होगी तत्पश्चाय वो उनन्यन

की अवस्था मे आएगी। और इन दोनों का समग्र रूप यानी क्रान्ति धन उनन्यन, उत्क्रांति जैसा या हिन्दी उत्क्रांति में परिवर्तित हो जाएगा । एक और उदाहरण है दही के जमावन को जब दूध में डालते हैं तब दही शनैः शनैः सम्पूर्ण दूध को दही में परिवर्तित कर देता है । यहां दही दुध से लड़ने के लिए नही वरन उसे परिवर्तित करने आया है। यही बात किण्वन और उनन्यन के साथ हिन्दी प्रसार में स्थापित होती है। हिन्दी प्रेम का एक तत्व हिन्दी से नफरत या हिन्दी के नकारने को समूल हिन्दी आकर्षण में बदल देगा ।

आंग्ल भाषा से कोई बैर नही है, किंतु वो हमें हमारी व्यवस्था का एक सुचारू संवाद माध्यम न दे पाए तो ये बहुत ही दुखद अवस्था है। लगभग 5 प्रतिशत से भी कम आंग्ल वार्ताकारों के लिए सम्पूर्ण देश की व्यवस्था नतमस्तक सी विद्यामान हो ये देश की अस्मिता का सबसे कटु अपमान है ।

तर्क बहुत है की हिन्दी की जरूरत नही है पर एक सार्वभौमिक सत्य को शायद ही कोई नकार पाए कि 70प्रश संस्कृत को समाहित करने वाली हिन्दी न्यूनतम इ से 30प्रश तक अन्य भाषाओं में अपनी आभा प्रसारित कर रही है। आप भारत मे प्रचलित सभी भाषाएं जैसे मलयालम, तमिल तेलुगु या गुजराती, बंगला, आसामिया या पंजाबी अथवा कश्मीरी हो कहीं न कहीं हिन्दी के दर्शन हो ही जाते है ।

आंग्ल भाषा मे भी कई शब्द हिन्दी के मिल जाएंगे जैसे किस्मत, साहेब, बाबू, आदि। तो कुल मिला के हिन्दी के किण्वन के बीज तो भारतवर्ष की जनता के मन मष्तिष्क के उनकी अपनी मातृभाषा के अंदर ही प्रसारित है बस एक उसे एक सूत्र में बांधने के लिए हिन्दी के लिए सही वातावरण बनाना है। यह परिकल्पना हिन्दी उत्क्रांति का पहला भाग यानी क्रान्ति स्थापित कर रही है ।

एक तर्क और मिलता है कि अपनी स्थानीय भाषा या मातृभाषा को छोड़ कर हिन्दी पर ध्यान क्यों दें। तो इसके लिए भी एक समाधान है । आप तीन भाषाएं सीखिए । डॉ. अर्पण जैन 'अविचल' की नव त्रिभाषा सूत्र किताब में यही व्याख्या है कि एक आपकी मातृभाषा एक राष्ट्रभाषा और तीसरी अंतरराष्ट्रीय भाषा । मातृभाषा में मलयाली, बंगाली, गुजराती, उर्दू आदि सीखिये और राष्ट्रभाषा में हिन्दी को अपनाइए बाकी अंतरराष्ट्रीय भाषा मे अंग्रेजी को अपनाइए । फायदा है ज्यादा भाषाएँ सीखेंगे तो मस्तिक्ष की तीक्ष्णता को पोषण मिलता है। यही परिकल्पना हिन्दी उनन्यन की और इंगित कर रही है तथा उत्क्रांति का दूसरा भाग स्थापित कर रही है । हिन्दी उत्क्रांति, हिन्दी को राष्ट्रीय एकता का एक पुष्ट सूत्र बनने की और अग्रसर है और इसका एक तर्क सम्मत सत्यापन ऊपर स्थापित किया जा चुका है। हिन्दी भाषा को जन समर्थन तो प्राप्त है लेकिन एक उपेक्षा का महीन तत्व भी मनस में आंदोलित है और उसका भी समाधान तर्कपूर्ण परिकल्पना से संभव है ।

मन से मन तक और तत्पश्चात जीवनचर्या तक यानी घर से व्यापार तक हिन्दी का प्रचार व प्रसार सुनिश्चितता से सुलभ है बस एक किंवणीय उरप्रेरक की जरूरत है जो कि हिन्दी योद्धा के कर्म के रूप में परिलक्षित होगा व हो भी गया है। हिन्दी योद्धाओं का एक समूह भिन्न देशों में अपने अपने स्तर पर हिन्दी को स्थापित करने का अथक प्रयास कर रहा है । इसी परपेक्ष ने भारत मे 'मातृभाषा उनन्यन संस्थान' ने हिन्दी उत्क्रांति के मूल विचार को आधार बनाकर एक ठोस रणनीति तैयार की है जिसको लागू करके हिन्दी को जन जन की और राष्ट्र की एक समृद्ध राष्ट्रभाषा बनाने के का प्रण लिया है ।

इसी प्रयास को ध्यान में रख कर एक मन का निश्चय सामने आता है कि ,भविष्य, हिन्दी का उज्ज्वल है और यह बात राष्ट्रीय स्तर पर सभी को जल्द ही स्वीकारनी होगी।

आलेख

पिंकी परुथी
'अनामिका'

वैवाहिक जीवन में बिखराव से बचें

विवाह इस मानव जीवन की सबसे बड़ी आवश्यकता है और एक सामाजिक दायित्व भी है। यह प्रेम अनुबंध दो मनुष्यों यानि पुरुष एवं स्त्री के परस्पर सहयोग और सहभागिता से आजीवन निभाया जाता है। सफल एवं सुखी वैवाहिक जीवन के कुछ नियम और शर्तें होती है,जिनका पालन दोनों के लिए अनिवार्य है।

प्रेम का यह अनूठा संगम,समर्पण और विश्वास की नींव पर ही टिका रहता है।

माना कि इतना आसान नहीं होता कि एक परिवेश में पालन-पोषण होने के बाद एकदम नए,अनजाने परिवेश में स्वयं को समाहित करना,किंतु यदि मानसिक क्षमताएं विकसित हैं तो बहुत कठिन भी नहीं है।

ऐसा भी नहीं है कि,पहले जब संयुक्त परिवार में सब रहते थे तो वैचारिक मतभेद और वैमनस्यता नहीं थी,लेकिन वो सारे मतभेद परिवार में ही सुलझा लिए जाते थे। हर व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी को अच्छे से समझता था। परिवार की मान-मर्यादा सर्वोपरि मानी जाती थी।

त्याग,तपस्या,सहयोग,तृप्ति,परंपराओं का पालन,जहां है,वह घर स्वर्ग है। आज विवाह शारीरिक और भावनात्मक आवश्यकता नहीं रही है,इसका सामाजिक रूप भी विकृत हो गया है। 'लिव इन रिलेशनशिप' ने इस संबंध पर और प्रहार किया है। आज के युवा जिम्मेदारी और बंधनों से मुक्त रहना चाहते हैं। शिक्षा प्राप्त करके घर से दूर भौतिकता में लिप्त हो गए हैं। परिवार में रहना उन्हें घुट-घुट के रहना लगता है। सेवा,समर्पण और सहानुभूति उनके हृदय में नहीं रह गई है।

माता-पिता के साथ छोटी जगह पर जीवन बिताने वाले को,मित्र ही पिछड़ा या जिंदगी की दौड़ में हारा हुआ मानते हैं।

अब समस्या यह है कि, वैवाहिक जीवन अल्प समय में ही टूटने लगे हैं। बिखराव का दंश झेलते तो दोनों ही हैं,लेकिन बुरा प्रभाव सिर्फ बच्चों पर पड़ता है। एकाकी अभिभावक बच्चों को पूरे संस्कार नहीं दे पाते हैं।

बिखराव के दौरान दोनों ही सहानुभूति खोजते हैं और जहां भी वह मिलती है, वहीं झुकाव बढ़ जाता है। कई बार तो उनके साथ जान-बूझकर खेल खेला जाता है और कमजोर पक्ष का इस्तेमाल कोई तीसरा ही कर लेता है।

खैर,कभी भी जब विवाह की जिम्मेदारी आती है,तो सबसे पहले पारिवारिक पृष्ठभूमि का कठोर जायजा ले लेना चाहिए। लड़की या लड़के,दोनों को ही पसंद करने में जल्दबाजी नहीं करनी चाहिए।

बचपन से ही बच्चों क़ो प्रेम,समर्पण, त्याग तथा सहयोग की भावना सिखाना चाहिए। बिखराव की सोच को बदलने की कोशिश करनी चाहिए। दोनों पक्षों को वार्तालाप करके ही समझाना चाहिए। इसका कारण यदि दहेज है,तो बिल्कुल भी भरोसा नहीं करना चाहिए। वो व्यक्ति कभी भी संतुष्ट नहीं होगा। ऐसे बर्ताव से तो अलगाव ही बेहतर है।

वैवाहिक जीवन में यदि अवैध संबंध कारण बन रहे हैं और बातचीत से भी नहीं सुलझे,तो अलगाव ही बेहतर है।मारा-पीटी भी सहनीय नहीं है। बड़ों की बात मानकर,मनमुटाव खत्म हों तो ठीक है,वरना आत्मसम्मान और आत्मविश्वास के साथ आत्मनिर्भर हो जाएं। यह सारी बातें लड़की के लिए ही कही हैं,पर

इसके विपरीत आज लड़के भी दबाव का शिकार हो रहे हैं। मेरा पक्ष निश्चित रूप से अलग होने के लिए नहीं है,बल्कि मेरा मानना है कि दिल जुड़े रहें,मन मिले रहें। जीवनसाथी के साथ अंतिम सांस तक निभाया जाए और मन,कर्म और वचन से आजीवन प्रेम से रहें।

स्वास्थ्य

डॉ.प्रदीप मुले

महिलाओं में हारमोन के बदलाव से भी वेरीकोज वेन की समस्या

महिलाओं में हामीन के आए बदलावों के कारण कई तरह के रोग अपनी गिरफ्त में ले लेते हैं। देखा जाए तो अधिकांश समस्याएं औरतों को गर्भावस्था के दौरान या फिर बाद में होनी शुरू हो जाती है। कभी-कभी गर्भावस्था के दौरान या मोटापे की वजह से महिलाओं के पैरों की रक्त धमनियां मोटी-मोटी हो जाती हैं और उनमें सूजन भी आ जाती है। इस समस्या को वेरीकोज वेन के नाम से जाना जाता है। इसी कारण पीड़ित का चलना-फिरना और खड़ा होना दूभर हो जाता है। जिससे उनके नियमित कार्य दुष्प्रभावित होने लगते हैं। कई लोग इस समस्या को कोस्मेटिक समस्या समझने लगते हैं और इसकी जांच कराने में विलंब करते रहते हैं। जिसके कारण समस्या आगे जाकर एक विकट रूप धारण कर लेती है।

कैसे होती है समस्या?

वैसे यह समस्या किसी को भी और कभी भी हो सकती है। लेकिन अधिकांश यह रोग औरतों में देखी गई है वे भी गर्भावस्था के दौरान। कई बार इन धमनियों में भयानक खुजली होने लगती है और अधिक खुजला देने के कारण वहां घाव या अल्सर बन जाता है। वेरीकोज वेन वे रक्तवाहिनी होती है जो कि मोटी होकर फैल जाती हैं। खासकर पैरों की रक्त वाहिनियों में यह समस्या पाई जाती है। यह अधिकतर पैर के पिछले हिस्से में दिखाई देता है।

दरअसल, यह इसलिए होता है क्योंकि हमारी रक्त धमनियों में वाल्व मौजूद होते हैं जो कि रक्त को विपरीत दिशा में प्रवाहित होने से रोकते हैं। पैरों की मांसपेशियां गुरुत्वाकर्षण के प्रभाव को कम करने के लिए धमनियों को पंप करते हैं ताकि पैरों से रक्त हृदय तक पहुंचता रहे और विपरीत दिशा में न प्रवाहित हो। लेकिन, जब ये धमनियां वेरीकोज हो जाती है तो वाल्व सही ढ़ंग से कार्य नहीं कर पाते और रक्त का प्रवाह विपरीत दिशा में अधिक होने लगता है। परिणामस्वरूप ये धमनियां फैलने लगती हैं और देखने में पैरों की धमनियां अजीब सी सूजी और फूली हुई प्रतीत होती हैं। इसके कई और कारण भी है जैसेः- मोटापा, मेनोपौज, आनुवांशिक, बढ़ती उम्र, गर्भावस्था आदि।

इस समस्या की पहचान निम्न प्रकार से होती है जैसेः-

पैरों का भारी होना, खुजली, एड़ी में सूजन, प्रभावित रक्तवाहिनियों का नीले रंग में बदलना, पैरों का लाल होना, रूखापन आदि, कभी-कभी उस भाग से रक्तस्राव होना। पैरों में अजीब से निशान पड़ जाना।

क्या करें क्या ना करें

इस समस्या का निदान करने के लिए विशिष्ट रूप से कुछ जुराबें तैयार की जाती है जो कि सूजन को कम करने में मदद करती है। पैरों में पुष्टिकरों की मात्रा बढ़ाती हैं और रक्तप्रवाह के क्रम को सही करती हैं। इससे दर्द भी कम होता है।

दर्द से छुटकारा पाने के लिए दवाइयां लेने की भी सलाह दी जाती है लेकिन इनसे दुष्प्रभाव भी अधिक होते हैं।

व्यायाम करने से भी कुछ हद तक आराम पाया जा सकता है। सलाह दी जाती है कि पीड़ित बैठते समय पैरों को सीधा खींचे और व्यायाम करे।

बेहतर इलाज है रेडियोफ्रीक्वेंसी एब्लेशन

सर्जरी के दौरान धमनियों के अतिरिक्त फैलाव को काटकर हटाया जाता है। लेकिन इसके कई दुष्प्रभाव भी होते हैं जैसे-घाव का बनना, निशान पडना, रक्तस्राव होना, संक्रमण आदि। फिर इसके दुबारा से उत्पनन होने के पूरे आसार होते हैं। लेकिन अब रेडियोफ्रीक्वेंसी एब्लेशन की मदद से इस समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है। यह एक शल्यरहित प्रक्रिया होती है जो कि लेजर या रेडियोफ्रीक्वेंसी की मदद से प्रभावित धमनियों तक किरणें डाली जाती हैं जिससे वे सही दिशा में रक्त प्रवाहित करने लगती हैं। इसमें एक सूक्ष्म छिद्र द्वारा नसों में पतली नली डालकर इलाज किया जाता है। इस तकनीक में इंटरवेंशनल रेडियोलोजिस्ट त्वचा पर एक सूक्ष्म छिद्र से घुटने के ऊपर या नीचे की नसों में पतली नली डालता है। इस नली के ऊपरी हिस्से में इलेक्ट्रोड होते हैं जो कि नसों की कोशिकाओं को गरम करते हैं जिससे मोटी नसें सूख जाती हैं और वेरीकोज वेन धीरे-धीरे ठीक हो जाती हैं।

रेडियोफ्रीक्वेंसी एब्लेशन सुविधाजनक व डेकेयर

इससे किसी तरह का पैरों में ऑपरेशन का कोई निशान नहीं पड़ता। रोगी को बेहोश करने की आवश्यकता नहीं होती। प्रक्रिया के 3-5 घंटों में घर जा सकता है। इस प्रक्रिया में सर्जरी की अपेक्षा खर्चा भी कम आता है। दर्द और वेरीकोज वेन जल्दी ठीक हो जाता है। इसमें रक्तस्राव का कोई खतरा नहीं होता है।

आलेख

डॉ. सुकेशिनी दीक्षित

मन को बैलेंस करिए

मन को बैलेंस करने की प्रक्रिया किसी एक दिन एक मिनट एवं एक पल का कार्य नहीं है , अपितु यह निरंतरता के अभ्यासक्रम की धीमी प्रक्रिया है , किंतु स्थाई । जीवन को सही रूप में जीने के लिए हर दिन हमें समाज में अपनी भूमिका दर्शानी होती है अपने सम्मुख उपस्थित समाज से वार्तालाप उनसे मिलना, उनके साथ कार्य करना आदि संपनन करना पड़ता है ।इसमें कहीं भी किसी भी क्षेत्र में हमारे परिवारी जन भी शामिल हो सकते हैं यह भी हो सकता है कि हम जिस स्थिति में उनके साथ विचार विमर्श करते हैं वहां मतभेद उत्पनन हो जाएं और बैलेंस होने की प्रक्रिया मैं बाधा उत्पनन हो जाए अथवा वह बाधा युक्त हो जाए ।।

किसी मुख्य उद्देश्य को लेकर ही

हम सभी जीवन में अग्रसर होते हैं , क्योंकि बिना उद्देश्य के जीवन नीरस ही प्रतीत होता है इन्हीं स्थितियों में जीवन को जीना किसी कलाकार की कला के समान एक प्रबुद्ध प्रशिक्षण के सदृश ही है ।।

अपने व्यक्तिगत मनोभावों की वस्तु स्थिति से प्रत्येक मानव भिनन भिनन स्थितियों में प्रभावित भी होता है क्योंकि सभी की अपनी-अपनी व्यक्तिगत क्षमताएं भी होती हैं भावों को केंद्रीभूत कर स्वयं को बैलेंस करने की ।।

समाज में स्वयं को बैलेंस करना किसी भी युद्ध से कम नहीं है, जो प्रत्येक मनुष्य को स्वयं से लड़ना पड़ता है यह युद्ध मानसिक स्तर पर भी निरंतर चलता ही रहता है उसमें आप की भूमिका किस प्रकार की है आपको यह सुनिश्चित करना है , कभी आप स्वयं को थका हुआ महसूस करते हैं या हारा हुआ भी मान सकते हैंष्ठ..किंतु हार जीत के पक्ष विपक्ष भी आपके अंदर ही मौजूद हैं क्योंकि जीत किसी भी प्रकार की हो यह आप स्वयं ही तय करेंगे मनोभावों के केंद्र में यदि आप विजित भाव से अपनी पताका लेकर स्थिर हैं तो मनोभावों का उद्रेक स्वयं ही शांत हो जाएगा ।

मन की उथल-पुथल भी आपका स्वयं का ही अर्जन है ,, जब आप अपने सम्मुख उपस्थित व्यक्ति की बातों से प्रभावित होते हैं, यदि आपके मन में स्वयं को स्थिर रखने की कुशलता का अनुभव है तो आप अप्रभावित ही रहेंगे उस व्यक्ति विशेष से जिसके प्रति कूल विचारों का आप संवहन कर सकते हैं सुनने मात्र से ।

कूल रहना अथवा शांत रहना आपका स्वभाव बन जाएगा यह निश्चित है। किन्तु यदि आप डझट. में विश्वास करते हैं तो आप डझट. अर्थात त्वरित होने की प्रक्रिया में उलझ जाएंगे और आप के प्रत्युत्तर भी झट वाले ही होंगे जो आपके चित्त की अस्थिरता को दर्शाएंगे ।

बैलेंस होने की प्रक्रिया हमें

जटिल अवश्य प्रतीत होती है ,क्योंकि हम उसे धारण नहीं कर पाते हैं। जब इस बैलेंसिग प्रक्रिया में हम दक्ष होने लगते हैं उसका द्वि स्थितीय भार,ड कम ज्यादा होते मन के उस पटल को भी उसी आधार पर बैलेंस करता है ., तो जीवन भार स्वरूप प्रतीत नहीं होता है , ...बल्कि मुस्कुराने लगता है , क्योंकि यह प्रक्रिया दुष्कर नहीं है अपितु अभ्यास के द्वारा ही आप समाज में अपनी भूमिका अपने ही मन को बैलेंस करके तथा ठीकरूप में उसका निर्वहन भी कर सकते हैं और कुशल भी हो सकते हैं क्योंकि यह आपके जीवन को उनन्त बनाने का एक अहम हिस्सा है।

कविता

अतुल पाण्डेय

कैसे कह दूँ कि प्यार नहीं

तू मेरे एकान्त का एकान्त है
कैसे कह दूँ कि मुझे प्यार नहीं
साँसों की लड़ियों में गुँथे हुऐ लम्हों के मनके
मुझे प्रेम प्रस्ताव ज्ञापित करते हैं
क्यों कह दूँ कि मुझे स्वीकार नहीं,

शब्द निरस्त हो जाते हैं
अधरों पर आकर
जैसे लहरें साहिल पर
तन्य तारों के सुर अंगुलियों पर
और तुम अपनी देहरी पर..

रखो अपने पैर कभी चौकठ-पार
भाव पा जाएँ शब्द
घुल जाए किनारा भी
कंपित हो उठे मन के तार
कि मैं एक कविता लिखूँ ...

चारू शिखा

दिल की बात

सर्द रात
और
एक प्याला काफी
तुम्हारा साथ
और
अनगिनत बात
रात के सननटे मे
हम दोनों एक साथ
सुनों
तुम हमेशा रहना
मेरे साथ
थामना मेरा हाथ
और
सुनहरे अक्षरों से
लिखना सबके दिल
की बात...
हम तुम
और
होंगे खूबसूरत एहसास
करेंगे
दिल की बात...।

सन्नाटा....

रूपम सिंह

कभी कभी रातों को
नीरव सा सन्नाटा....
मचाता है शोर, इस कदर
उचट जाती है नींद, आँखों से...
क्रंदन और रुदन
यह शोर, इस चुप्पी का...
छूता है कहीं, अंदर तक
जैसे कोई मौनव्रतधारी तपस्वी
तड़प रहा हो, सिद्धी के लिए....

और ऐसे में
सामने खड़ा वो पलाश का ठूँठ,
दोनों बाँहें पसारे, चाँद की ओर...
मानो जन्म-जन्मांतर की विरहणी
पुकारती अपने प्रियतम को....
या कोई नादान बालक
गोद में उठा लेने का हठ किए....

और निष्ठुर चाँद
बढ़ा जा रहा निर्विकार,अपने पथ पर..
एक नया चित्र, एक विचित्र दास्तान
बाँचता है सननटा,
रात भीगने के बाद
सननटा छाने के बाद.....??

संस्मरण

अपर्णा झा

'अपनी पहली रेल यात्रा वृतांत'

आज भी याद आता है अपनी वो पहली रेल यात्रा।कक्षा एक की विद्यार्थी मैं, अशोक कुमार के स्वर में वो गीत 'रेलगाड़ी छुक-छुक-छुक,बीच वाली स्टेशन बोले रुक-रुक-रुक।' रेलगाड़ी की कल्पना बस इसी गाने ही से तो थी. पता नही उस दौरान वातानुकूलित बोगी की सुविधा थी या नहीं। हम प्रथम श्रेणी कक्ष में प्रवेश लिए. 5 लोग तो हमहीं थे और छठा कोई एक और।फिर बाबूजी ने कक्ष का दरवाजा कुछ इस तरह से अंदर से बन किया जैसे अपने घर के मुख्य द्वार को रात के समय बंद करते हैं.तीन दिन का सफर।जमशेदपुर से दिल्ली और फिर जम्मू।,

स्टेशन पर बिकने वाले हर खाद्य पदार्थ चटखारे ही लगते, ट्रेन का खाना मानो किसी ने ससम्मान आमंत्रित किया हो।नदी,पहाड़,पठार, भोर,साँझ दुपहर हर कुछ नई ही तो लग रही थी.बड़ी बहनों ने जो इतिहास,भूगोल और समाजशास्त्र की किताबें पढ़ीं थी, सब पाठ सदृश्य हो रहे थे।वो देखो एटलस सायकिल का कारखाना,तो वो देखो चीनी मिल इत्यादि-इत्यादि.उस सब समय में यह मस्ती सी लगती थी,पिकनिक सी लगती थी और फिर वही रेल यात्रा कुछ खास से आमबातों सी हो गई. क्योंकि हम बड़े ही हुए थे रेल की सफर करते हुए.बाबूजी की नौकरी कुछ समय सीमा पर स्थानों का स्थानांतरण नुमाया करती.

जब कॉलेज जाने लगे तो घर में भी एक स्थायित्व सा आ गया.और फिर सालों तक रेल को हमने देखा नहीं. गर्मी या सर्दी की छुटियों में होस्टल वाले विद्यार्थी 15 दिन पहले से रेल टिकट की कतार में लगने लगते तो क्लास बिल्कुल खाली हो जाता.मैं यूँही एक दिन मित्रों के समक्ष हंसी-मज़ाक में बोल उठी–' तुमलोग एक महीने पहले से रेलवे रिज़रवेशन की बातों से बोर करने लगते हो।' तभी एक मित्र मुंह बना कर बोल बैठा।कभी रेल में बैठी भी हो?'बड़ा अटपटा सा लगा था तब,कि वो ऐसा कैसे कह सकता था.बाबूजी तो हमे प्रथम श्रेणी और बाद में वातानुकूलित रेलगाड़ियों में सफर कराते थे जो कि हवाई जहाज के सफर से कम प्रतीत नहीं होता था.हाँ,ये बात तो तय थी कि इधर कुछ सालों से हम कहीं दूर सफर पर गये नहीं.

बचपन में रेल के सफर की दूसरी स्थिति मैंने तब महसूस किया जब मै विवाह के पश्चात गुड़गांव बसने आई थी.किराए का मकान था.मकान मालिक के दो बच्चे थे, क्रमशः तीसरे और आठवीं कक्षा के छात्र.एक शाम दोनो बच्चे मेरे पास रोमांचित मुद्रा में आये.उनकी खुशी का ठिकाना न' था.कहने लगे कि वह जीवन में पहली बार रेलगाड़ी भी देखी और सफर भी किया.उनका रोमांच ठीक उसी प्रकार का था जैसा कि मैंने बचपन में अपने पहली रेल यात्रा में महसूस किया था.परन्तु मेरे मन में प्रशन उठा कि भला ऐसे कैसे हो सकता कि अबतक इन बच्चों ने रेल नहीं देखी थी।फिर त्वरित मन में ख़याल आया कि ये लोग हम जैसे खानाबदोश थोड़े ही हैं कि नौकरी कहीं,घर कहीं, मां-बाप कहीं और ससुराल कहीं।इनका तो सारा ठौर-ठिकाना ही कुछ किलोमीटर की दूरी पर है।तो इन्हें रेलवे स्टेशन तक भी जाने की जरूरत क्यों?

तीसरी स्थिति बचपन के रेलगाड़ी का अनुभव तब हुआ जब बेटा शायद चार साल का रहा होगा.उससे पहले वह अपने टीवी पर टाइनी टीवी देखने का बड़ा शौकीन था.उसके

किरदार उसे पूरी तरह से भा गए थे,बल्कि खान-पान,सोने उठने,बोलने के तरीके भी उसके पूर्णतया प्रभावित हो चुके थे.उस चैनल पर एक ट्रेन की भी कहानी चलती थी जिसके किरदार रेल ही थे जो आपस में बात करते थे.एक ट्रेन का नाम तो मुझे याद आ रहा है 'रिचड्र्स' और, तीन और रेल गाड़ी थे.बेटा वह देख कर बड़ा खुश होता था. उसकी समझदारी आने के बाद जब हम अपने गाँव जाने दिल्ली के रेलवे स्टेशन पहुंचे,एक साथ इतनी रेलगाड़ियां वो भी इतनी बड़ी-बड़ी देख वो समझ ही नहीं पाया.और फिर टीवी पर तो गाड़ियां इतनी छोटी-छोटी दिखती।तो फिर ये क्या..! मैं समझ गई, फिर उससे कहा कि ये उनके पापा-मम्मी हैं इसलिये बड़े दिखते हैं और इसके रहने के लिए स्टेशन भी तो बड़ा चाहिये ना! वो तब मान गया.जब गाड़ी के अंदर आया और गाड़ी चलने लगी तो उसके ख़ुशी का ठिकाना ना था।किराए के मकान में,और किरायेदार होकर रहना और छोटी सी गाड़ी में इधर-उधर घूमना।.ये सब उसकी कल्पना में भी कहां आने वाले थे.इतनी बड़ी गाड़ी में और इतने लोगों के संग सफर, उसने सोचना बन्द कर दिया,बस खुशियां और खुशियाँ,रोमांच और रोमांच की दुनिया उसमें सिमट कर आ गई थी.

मैंने ये तीन बचपन के उदारण पहली रेल यात्रा वृतांत की इसलिये दी कि मुझे लगता है यदि मैं तीनों की तुलना करूँ, जिसमें परिवेश बच्चों के पलने की बेशक थोड़ी अलग हो परन्तु आनंद और रोमांच रेलगाड़ी और इसके सफर की लगभग हरकिसी में एकही रही.रेलगाड़ी की यात्रा करना यानी कि समाज,संस्कृति को एक साथ जीना,अनेकों मनोभाव/दशा को जीना यानी अपने देश की विवधताओं के गुलदस्ते में,वीथिकाओं में खुद को खो देना और उन पलों में समा जाना जो हमेशा अनेक किस्सों,हकीकत को बयां करती हो और जीवन में कुछ खुशगवार पल बन आपको खुशियां देती रहे.यूँही नहीं रेलगाड़ी,साहित्य सिनेमा, और समाज के लिये प्रिय विषय रही.हर उम्र ने रेलगाड़ी की यात्रा का आनन्द अलग-अलग नज़रिए से लिया, परन्तु बचपन में की गई रेगाड़ी की यात्रा बस ऐसी ही रही, जिसका आनन्द ठीक दादी नानी के मुंह से कही लोक कथाओं और गीतों का आंनद ताउम्र के लिये।

व्यंग्य

सुरेश सौरभ

सरकस

ब्रह्म लोक में हनुमान जी बहुत नाराज चले आ रहे थे। आते ही राम जी के चरणो में सिर नवा कर बोले- प्रभु जी मैं तो सिर्फ आप का भक्त हूं । साधु हूं । लोग कहते भी हैं जात न पूछो साधु की, पर मुझे जान बूझकर दलित बनाया जा रहा है । चुनाव के पेंच में मुझे कनकैया बना कर लड़ाया जा रहा है। मैं धरती पर इस तरह अपना तिरस्कार कतई बर्दाश्त नहीं कर सकता । अगर आप ने कुछ नहीं किया तो मैं वही स्टेप उठाऊंगा जो रावण की लंका में उठाया था। तब तक वहीं उदास खड़े अपनी बड़ी-बड़ी दाढ़ी खुजाते हुए जामवंत बोले- मुझे भी भय खाए जा रहा है कहीं बड़ी-बड़ी दाढी॰ के कारण मुझे मुसलमान न बना दिया जाए। तब नल नील और अंगद भी राम जी से कहने लगे- प्रभु कुछ करें वर्ना बारी -बारी से ये चुनाव वाले हमें उड़ानझल्ले की तरह उड़ाते रहेंगे । बहुत देर तक राम जी अपने भक्तों की फरियाद सुनते रहे। जब सुनते-सुनते उनके कान पक गये तो बोले - मैं क्या करूं ,जब मुझे ही बरसो से टाट पट्टों मे, चुनाव वालों ने पटक रखा है। अभी उनका पाप का घड़ा भरा नहीं है । तुम सब धैर्य रखो पूरा पाप का घड़ा भरते ही फूट जायेगा। तब तुम लोगों का हिसाब मैं गिन-गिन कर चुकता करूंगा। तब-तक बस तुम लोग चुनावी सरकस का मजा लो और मौज काटो।

संस्मरण

राजनारायण द्विवेदी

थापी नही पीठ थपथपाया था गुरुदेव ने

यह बात 1980 कि है मैं जब कक्षा 6वी का छात्र था। हमारे गुरुवर संस्कृत व्याकरण पढ़ा रहे थे और हम सभी पीपल पेड़ के निचे बैठकर पढ़ रहे थे । पहली घंटी मे ही गुरूजी ने कुछ प्रश्न दिये थे । सभी छात्रों ने हल किया और आधे घंटा में प्रशने उतर लिखकर कॉपी चेक कराना था।

मैं शाला का सबसे कमजोर विद्यार्थी था। पर मैं नहीं मानता था कि मैं सबसे कमजोर हूँ । हाँ कुछ विषय में मेरी कमजोरी थी इस सच्चाई को मेरा अंतःकरण स्वीकार करता था । मेरे साथीगण भी हतोत्साहित कर देते थे इसलिए यह भावना मेरे मन में आ जाता था कि मैं कमजोर विद्यार्थी हूँ । मेरे पिताजी भी बाहर रहते थे इसलिये भी कोई बात किसको बताउं समझ में नहीं आता ।

मेरी माँ भी पढ़ी लिखी नहीं थी । सच कहा जाय तो मेरे जीवन में प्रोत्साहन कि कमी थी । मेरा बचपन से आदत रहा है कि पिछली पंक्ति में कभी खड़ा नहीं होता । ऐन - केन प्रकारेण कुछ तो बताउंगा । कोशिश करता था। और यह सच है कि कोशिश करने वालों की हार नहीं होती। इसी क्रम से मै आगे बढ़ा , सफलता मिली । स्वयं के विषय में स्थिति यह बनती थी कि मैं जिस प्रशन का उत्तर जानता था उसके लिए भी हाथ नहीं उठाता था । उस दिन सभी छात्र अपनी अपनी कॉपी लेकर गुरुजी के समक्ष खड़े थे। बारी-बारी से गुरुजी सबका कॉपी चेक कर रहे थे ।

गुरुजी ने प्रश्न पुछा ! मैंने सोचा किसी का सुनकर मैं भी कुछ बता दुंगा । पर स्थिति यह बनी की 30 छात्र मे 03 छात्र ही हाथ उठाऐ जिसमें एक मैं भी था । एक विद्यार्थी जो शाला का सबसे तेज विद्यार्थी था । दुसरा विद्यार्थी जिसके घर गुरुजी रहते थे । अब मैं डर गया कि कहीं गुरुजी सबसे पहले मेरे से न पुछ दे । मैं क्या करुं ऐसा सोच सोच कर परेशान था । पर आत्मविश्वास यह था की कुछ तो बता दुंगा गलती सही का बिना परवाह किये बिना और हुआ भी ऐसा ही।

गुरुजी ने सबसे पहले उस छात्र से उत्तर पुछा जिसके घर रहते थे पर वह छात्र भी सायद मेरे जैसा ही सोचा होगा कि 'किसी का सुनकर कुछ बता देगें' पासा उल्टा हो गया । वह भी कुछ नहीं बताया ।

अब बारी मेरी थी । गुरुदेव ने मेरे तरफ देखे । मैं गुरुजी के कुर्सी से सटकर खड़ा था । गुरुदेव ने पुछा

'कर्ता का चिन्ह क्या है' झट से मेरे जुबान से निकला 'को' गुरुदेव ने मेरे पीठ पर तीन थापी मारा । मैं समझा मैं गलत बता दिया इसलिए गुरुजी ने मारा । पर वह थापी नही था ष्ठ.. गुरुदेव ने मेरा पीठ थपथपाया था । सही उत्तर के लिए ।

यह संस्मरण मुझे बार-बार याद आता है । मैं गुरुदेव के चरणों नमन करता हूँ । आज मैं जो भी हूँ उन्हीं गुरुदेवों के आशीर्वाद से हूँ ।

यात्रा वृत्तांत

गुलाबचन्द पटेल

मेवाड़ की धरती चितौड़गढ़-यात्रा वृत्तांत

चितौड की यात्रा मेरे लिए एक यादगार प्रसँग है क्यूँ कि हमें राजकुमार राजन फाउंडेशन, अकोला, चितौडगढ़, राजस्थान की ओर से श्री अम्बालाल हिंगड़ हिन्दी बाल साहित्य अवार्ड 2016-17 शाल, पुष्पमाला और रु.2100/- रूपये की धन राशी के साथ दिया गया था, और उसी कार्यक्रम में हमें 'समीर दस्तक साहित्य पत्रिका' भोपाल की ओर से 'साहित्य गौरव सम्मान-2017' भी प्रदान किया गया था।हमें जिस होटल में निवास करवाया था, उसी होटल में रात में राजकुमार जैन की अध्यक्षता में कवी सम्मलेन भी आयोजीत किया गया था।

हमारा कार्यक्रम था उसी दौरान पद्मिनी मूवी का विवाद चल रहा था । हम दुसरे दिन किले में गये तब वहां के राजपूत समाज के लोग पंडाल की निचे अनशन पर बैठे थे।किले में हमने रजवाडी पोषक में घुड़सवारी की थी और तस्वीरें भी संस्मरण के रूप में खिंचवाई थी ।हम एक दिन के राजा बन गए ऐसी अनुभूति हुई थी।

साहित्यकार के रूप में राजकुमार जैन फाउंडेशन अकोला की ओर से दो अवोर्ड के लिए चयनित कोने के कारण चितौड़गढ़ जाने का, देखने का सुंदर अवसर मिला था।

कार्यक्रम के दुसरे दिन हम सभी साथी साहित्यकार / कवि मित्रों ने चितौड़गढ़ में स्थित किल्ला देखने का प्लान बनाया ।हम एक कार से मित्रों के साथ चितौड़गढ़ में प्रवेश किया। बहुत ऊंचाई पर यह किल्ला स्थित है।बहुत ही सुंदर है।ऐसी पौराणिक और ऐतिहासिक जगह देखना हमारे नसीब में एक सुंदर तक है। चितौड़गढ़ का पहला शाका राघव रामसिंह की मृत्यु के बाद उसका पुत्र रतनसिंह इ.स. 1302 में चितौड़गढ़ की गद्दी पर बैठा था। उसके बैठने के कुछ ही महीनों बाद अलाउदीन खिलजी ने चितौड़ पर आक्रमण किया। करीबन छह मास तक दुर्ग की रक्षा के लिए टक्कर लिया किन्तु, जब दुर्ग की रक्षा कर पाना संभव न रहा गया तो दुर्ग के भीतर की स्त्रियों ने रतनसिंह की रानी पद्मावती के नेतृत्व में जौहर किया। हिन्दू वीरों ने राजा रतनसिंह को शाका किया। चितौड़ दुर्ग पर खिलजी का अधिकार हो गया। उसके बाद अलाउदीन खिलजी ने चितौड़ का राज्य अपने पुत्र खिजरवां को सोंप दिया व उसका नाम चितौड़ से बदलकर 'खिजराबाद' रख दिया। चितौड़ दुर्ग में मीराबाई का मंदिर स्थित है। मीरा का जन्म इ.स. 1504 में हुआ था। उसका विवाह महाराजा सांग के जयेष्ट पुत्र लोजराज के साथ हुआ था। मीरा ने अपना मन कृष्ण की भक्ति में लगा दिया था। मीरा के परिवारजनों को ये अच्छा नहीं लगता था। अंत में मीराने मेवाड़ त्याग दिया था। सांगा के बाद में मेवाड़ की गद्धी पर महाराणा रतनसिंह बैठा था। सन 1533 में गुजरात के सुल्तान बहादुर शाह ने चितौड़ पर आक्रमण कर दिया था।

मेवाड़ की वीर भूमि पर 9 मई सन 1540 को वीर शिरोमणि महाराजा प्रताप का जन्म हुआ था। महाराजा प्रताप सन 1572 में मेवाड़ की गद्दी पर बैठे, उस समय चितौड़ सहित मेवाड़ के अधिकांश ठिकानों पर अकबर का अधिकार हो गया था ।

अजमेर खंडवा जाने वाले रेल मार्ग पर चितौड़ जंक्शन आता है। चारों ओर मैदान से घिरी हुई पहाड़ी है। जिस पर प्रसिध्ध किला चित्रकूट (चितौड़गढ़) बना हुआ है। 63 एकड़ भूमि पर ये बसा है। चितौड़गढ़ के प्रथम द्वार को पाडन पोल कहते है। वहां एक चबूतरा है। वहां बांधसिंह का स्मारक है। धमासान युध्ध के दौरान लहू की नदी बहती थी। उसमें एक पाडा बहकर प्रवेश द्वार तक आ पहुंचा। इसी लिए उसे पाडन पोल द्वार कहेते है। भैरव पोल, हनुमान पोल और चौथा द्वार गणेश पोल है। पांचवां और छठा साथ होने से

जोडन पोल कहते है। लक्ष्मण मंदिर के पास छठा प्रवेश द्वार है उसे लक्ष्मण पोल कहते है। सातवाँ प्रवेश द्वार राम पोल है। राम पोल के भीतर सिसोदिया पता का स्मारक है। पुरोहित की हवेली भी है। तुलजा भवानी का मंदिर भी है। दासी पुत्र बनवीर ने इ.स. 1536 में निर्माण करवाया था। बनवीर ने इ.स.1536 में दुर्ग को दो भागों में दुर्ग की दीवार बना के बाँट दिया था। उसके पास नवलखा भंडार है। यहाँ नौ लाख रुपयों का खजाना पड़ा रहता था इस लिए उसे नवलखा भंडार कहते है।

पुरातत्व संग्रहालय में प्राचीन मूतिर्याँ और बड़ी बड़ी तोपें रखी गयी है। भामाशाह की हवेली भी है। उसने हल्दीघाटी के युध्ध दौरान महाराणा प्रताप का धन राजकोष खाली हो गया था तब भामाशाह ने अपनी पूरी पीढ़ियों का संचित धन महाराणा को भेट किया था। महाराणा सांगा का देवरा श्रृंगार चवरी के दक्षिण में भगवान नारायण देव की आराधना के लिए बनवाया था।

फ़तेहप्रकाश महल भी है। जो उदेपुर के महाराणा फ़तेहसिंह ने बनवाया था। इ.स. 1448 में महाराणा कुम्भा के खजांची बेलाक श्रृंगार ने श्रृंगार चवरी का निर्माण करवाया था, वो शांतिनाथ मंदिर है। वहां महाराणा कुम्भा का भी महल है। यहाँ मीरा कृष्ण की आराधना की व विषपान स्वीकार किया था। ये महल चितौड़ का गौरव है। एक सुरंग है, जिसे पद्मिनी के जौहर का स्थान बताया जाता है। सतीत्व की रक्षा के कारण महारानी पद्मिनी के साथ हजारों वीरांगनाओ ने सुरंग के रास्ते से गौ मुख कुंड में सनन किया व तहखानों में विश्व प्रसिध्ध जौहर किया था। वहां पुराना मोती बाजार भी खंडहर के रूप में है। सतबीस देहरी जैन मंदिर कला उत्कृष्ट है। कुम्भ श्याम का मंदिर भी है।

मीरा मंदिर कुम्भ श्याम मंदिर के चोक में है। अब वहां मीरा व कृष्ण की भक्ति प्रतिमा है। मंदिर के सामने संत रैदास की छतरी भी बनी हुई है। जटाशंकर महादेव का मंदिर विजय स्तंभ की ओर जाते समय मीरा मंदिर के सीधे हाथ की तरफ स्थित है। विजय स्तंभ मालवा के महमूद शाह खिलजी को हरा कर अपनी ऐतिहासिक विजय की याद में महाराणा कुम्भा ने बनवाया था। इ.स. 1448 में बनवाया था। 122 फिट ऊँचा है। नौ मंजिला है 30 फिट चौड़ा है। समिधेश्वर महादेव का भी मंदिर है। महासतियों का जौहर स्थल जो चारों ओर दीवारों से घिरा हुआ है। चितौड़ में बहादुरशाह के आक्रमण के समय हाडी रानी कर्मवती ने 13 हजार वीरांगनाओं के साथ यहाँ जौहर किया था।

कलिका मंदिर के आगे नौ गजा पीर की मजार है। पदमनी महल झील के किनारे बनी है। एक छोटा महल पानी के अंदर बना है। जो जनाना महल कहलाता है। राघव रतनसिंह की रूपवती रानी पदमनी इन महल में रहती थी। वहां मरदाना महल है। उस में एक कमरे में विशाल दर्पण जो जनाना महल की सीढियों पर खड़े व्यक्ति का स्पष्ट प्रतिबिंब दर्पण में नजर आता है। परन्तु पीछे मुड़कर देखने पर सीढि पर खड़े व्यक्ति को कोई भी नहीं देख सकता है। अनुमान है कि अलाउदीन खिलजी और रतनसिंह यहाँ बैठ कर शतरंज खेल रहे थे तो उसने इस दर्पण से रानी पदमनी का प्रतिबिंब देखा। यहाँ गौ मुख कुंड भी है। जयमल पताका महल भी है। कलिका मंदिर है। सूर्य कुंड, खातन रानी का महल भी देखने को मिला। भाक्सी नाम का कारागार भी है। चित्रांग मोरी का तालाब भी है। राज टीला है। दुर्ग की अंतिम छोर चितौड़ी बुज नामसे जाना जाता है। गोरा बादल की हवेली है। राव रमल की हवेली भी है। यहाँ भीमलत कुंड भी है। इस पांडव भीम ने लात मारकर बनाया था। इस लिए उसे भीमलत कुंड कहते है। चौदवीं सताब्दी का 75 फिट ऊँचा छोटा कीर्ति स्तंभ भी है। उसकी बाजु में महावीर स्वामी का मंदिर बना हुआ है। चारभुजा विष्णुजी का मंदिर है। रतनसिंह का महल है। बाण मातो का मंदिर भी है। लाखोटी बारी महाराणा लाखा ने बनवाया था। चल फिर शाह की दरगाह शहर के बीच गोल प्याऊ चौराहे के सामने करीबन 80 वर्ष पुराणी है।

चितौड़ दुर्ग से 11 किमी उत्तर में नगरी नाम अति प्राचीन स्थल है। चितौड़ 60 किमी उत्तर पूर्व में मात्रु कुण्डियाँ है। जो राजस्थान का हरिद्वार के रूप में प्रसिध्ध है। बनास नदी के तट पर स्थित है। चितौड़गढ़ से 142 किमी उत्तर पूर्व में बिजोलिया से 30 किमी दूर दक्षिण में मेनाल धरती पर महानाव नदी में 122 मीटर की ऊंचाई से एक झरना (जल-प्रपात) गिरता है। ये स्थान पर हम जा नहीं सके। भदेसर गाँव से 15 किमी दूर 'मंडफिया' गाँव में सांवरियाजी का विश्व विख्यात मंदिर है। काले पत्थर की श्री कृष्ण की मूर्ति, मंदिर के मुख्य गर्भ गृह में स्थापित है। यह सावंरिया शेठ का मंदिर कहलाता है। चितौड़ बहुत सुन्दर स्थल है। एक बार अवश्य मुलाकात लें।

लघुकथा

अदिति रूसिया

दहेज के लोभी दरिंदे

मोनिका ने अपनी बड़ी बेटी प्रिया की शादी बड़ी ही धूम धाम से की । बड़े अरमानों के साथ उसे बिदा किया । फूल सी नाज़ुक प्रिया का ससुराल वालों ने स्वागत बहुत अच्छे से किया । अभी कुछ ही दिन बीते थे की घर वालों ने अपने तेवर दिखाने शुरू कर दिए । प्रिया ने भी सोचा मुझे भी यहाँ कौन सा अधिक दिनों तक रहना है । छुट्टियाँ समाप्त होते ही मैं यहाँ से बाम्बे चली जाऊँगी । वहाँ मुझे इन गहनों की ज़रूरत भी नहीं । चुपचाप उसने अपने सारे ज़ेवर दे दिए । अपने माँ पापा से भी नहीं कहा ।

थोड़े दिनों बाद प्रिया बाम्बे चली गई ।

अशोक का व्यवहार भी प्रिया के साथ कुछ ज़्यादा ठीक नहीं था । वो उसे हमेशा ताना मारा करता क्या दिया है तुम्हारे माँ बाप ने , कुछ भी नहीं । देखो ज़रा नितिन को ससुराल से कार मिली है । एक फ़्लैट भी गिफ्ट किया है उसे । तुम देखो क्या दिया तुम्हारे माँ बाप ने । रोज़ रोज़ सुन कर प्रिया के कान पक गए थे ।

एक दिन उसने गुस्से में कह दिया क्या नहीं दिया ये बताओ मेरे मम्मी पापा ने । अरे जो कुछ तुम लोगों ने माँगा वो सब दिया अब और क्या दे दें । अभी मेरी छोटी बहन भी है शादी के लिए क्या सब कुछ तुम्हीं को दे देते । तुम्हें घर चाहिए न बस वो भी मिल जाएगा ।

प्रिया ख़ुद इतना कमाती थी कि उसे किसी की ज़रूरत नहीं थी उसने दूसरे दिन ही एक फ़्लैट बुक कर दिया । उसके पेपर लाकर अशोक के हाथ में थमा दिए । लो तुम्हें घर चाहिए था न ये रहे घर के पेपर । अब मेरे माँ पापा को मत कोसना।

साल भर भी नहीं हुए थे कि घर में नया मेहमान आ गया। एक प्यारे से बेटे जन्म हुआ पोते को देखने सास ससुर आए तो जम कर वहीं के हो गए । अब क्या था पूरा परिवार किसी किसी बात को लेकर प्रिया को पीटता तो कभी खाना नहीं देते । तंग आकर हारकर प्रिया ने अपनी मम्मी से सारी बातें बताई ।

मोनिका और रमेश ने अपनी बेटी की ख़ुशी की ख़ातिर अशोक की सारी शर्तें पूरी करते रहे । उन्हें लगा शायद ऐसा करने से उनकी बेटी का जीवन सुखी हो जाएगा पर नहीं !

प्रिया की दिन पे दिन परेशानियाँ और बढ़ने लगी । अशोक ने इस बार 50 लाख की माँग की । पैसे मिलने पर प्रिया को मार डालने की धमकी दी । प्रिया ने कह दिया मैंमर जाऊँगी पर अब अपने पापा से पैसे नहीं माँगूँगी । तुम जैसे लालची दरिंदे को अब एक भी पैसा नहीं मिलेगा । अशोक ने प्रिया को कमरे में बंद कर ख़ूब पीटा , उसे खाना नहीं दिया उसके बेटे से भी दूर कर दिया । नन्हा राहुल भूख से रोता रहा पर अशोक ने बच्चे को बिलखता छोड़ दिया । अशोक की मनमानी बढ़ती जा रही थी उसका पूरा साथ उसकी माँ दे रही थी ।

इधर कई दिनों से मोनिका को प्रिया की कोई ख़बर नहीं मिली तो उसे भी घबराहट होने लगी । मोनिका ने अशोक को फ़ोन लगाया । प्रिया कैसी है ?

अशोक ने अपनी डिमांड बता दी और कह दिया अगर आपने दो दिनों में मुझे 50 लाख नहीं दिए तो अभी तो ज़िंदा है दो दिन बाद पता नहीं.... बोल कर फ़ोन रख दिया । प्रिया को जब सारी बातें पता चली तो उसने अशोक के दफ़्तर जाते ही बैग उठाया और थाने चली गई । वहाँ उसने अशोक और उसकी माँ के ख़िलाफ़ रिपोर्ट दर्ज करवा दी ।शाम को जैसे ही अशोक आया प्रिया ने साफ़ कह दिया अब मैं तुम्हारी धमकियों से डरने वाली नहीं । अब मैं नहीं जो कुछ करेगी पुलिस ही करेगी ।पर अशोक ने कुछ और ही सोच रखा था । उसने पूरी रूप रेखा तैयार कर रखी थी प्रिया को ऊपर पहुँचाने की । रात में खाना बड़े प्रेम से खाया प्रिया के साथ बैठ कर और उसके बाद दोनों कमरे में गए । प्रिया को लगा अशोक डर गया पर ऐसा कुछ न था । तुम आराम करो मैं कुछ काम निपटा कर आता हूँ और थोड़ी ही देर बाद प्रिया की चीख़ कमरे में गूँज उठी ....प्रिया जो सोई तो उसने सुबह का सूरज नहीं देखा । अशोक ने उसे गला घोंट कर मार दिया और पंखे से लटका कर एक स्टूल वहाँ रख दिया । बाहर आकर सोफ़े पे सो गया ।

सुबह ज़ोर ज़ोर से हल्ला मचाने लगा सारी बिल्डिंग के लोगों को माँ ने इकट्ठा कर लिया । मेरी बहु ने फाँसी लगा ली चली गई का रोना पीटना मचा दिया । जब ख़बर प्रिया के माता पिता को लगी तो उनके तो होश ही उड़ गए कहाँ वो अपनी बेटी की ख़ातिर पैसे ले कर निकल चुके थे उन्हें क्या पता था कि इन दहेज के लालची दरिंदे सुबह होने का भी इंतज़ार न कर पाएँगे ।

लघुकथा

डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी

झूठे मुखौटे

साथ-साथ खड़े दो लोगों ने आसपास किसी को न पाकर सालों बाद अपने मुखौटे उतारे। दोनों एक-दूसरे के 'दोस्त' थे। उन्होंने एक दूसरे को गले लगाया और सुख दुःख की बातें की।

फिर एक ने पूछा, 'तुम्हारे मुखौटे का क्या हाल है?'

दूसरे ने मुस्कुरा कर उत्तर दिया, 'उसका तो मुझे नहीं पता, लेकिन तुम्हारे मुखौटे की हर रग और हर रंग को मैं बखूबी जानता हूँ।'

पहले ने चकित होते हुए कहा,'अच्छा! मैं भी खुदके मुखौटे से ज़्यादा तुम्हारे मुखौटे के हावभावों को अच्छी तरह समझता हूँ।'

दोनों हाथ मिला कर हंसने लगे।

इतने में उन्होंने देखा कि दूर से भीड़ आ रही है, दोनों ने अपने-अपने मुखौटे पहन लिये।

अब दोनों एक दूसरे के प्रबल विरोधी और शत्रु थे, अलग-अलग राजनीतिक दलों के नेता।

श्रीमती गीता द्विवेदी

बस का टिकट

रोज की की भाँति आज भी रेखा स्कूल से जैसे ही घर पहुँची कि सुभाष ने तपाक से पूछ। आज भी बस से आयी न , किसी और की गाड़ी से तो नहीं ? प्रतिउत्तर में रेखा ने कुछ न कहा, चुपचाप अपना बैग खोला और उसमें से बस की दो टिकटें निकाल कर सुभाष के हाथ पर रख दिया । फिर भर आयीं आँखों को छिपाने का प्रयास करती हुई , भारी कदमों से बाथरूम की ओर चली गई । इधर सुभाष ने उन टिकटों को ऐसे देखा जैसे कि वो रेखा के 'चरित्र प्रमाण -पत्र हों । और उसके चेहरे पर संतुष्टि के भाव उभर आए । उसी समय उसकी आठ वर्षीय बेटी रोली , खिलखिलाते हुए सुभाष के नजदीक आयी तो उसने रोली को गोद में बैठा लिया , और पुचकारते हुए पूछा ष्ठ. मेरी बिटिया रानी बड़ी होकर क्या बनेगी ? तब रोली ने हँसते हुए कहा - डॉक्टर ! फिर अपनी बालसुलभ उत्सुकता से पूछा 'पापा पर क्या मम्मी की तरह मुझे भी दो टिकटें रोज घर लानी होगी?' पर सुभाष के पास रोली के इस प्रश्न का कोई उत्तर न था । वो तो बस उसे अपलक ताकता ही रह गया ।

फिल्म समीक्षा

फिल्म–2.0

डॉ.अवधेश कुमार जौहरी

फिल्म 2.0 की समीक्षा को लेकर आपके समक्ष उपस्थित हुआ हूं। यह फिल्म देखने के बाद मेरे मन में आया की, इस फ़िल्म के बारे में आप लोगों से बात किया जाय। फ़िल्म समीक्षा करने से पहले हम तनिक इस बात पर गौर करें की , कोई भी सिनेमा,समाज का दर्पण होता है, एक कथाकार कहानी लिखता है ,उस पर फिल्म बनती है , और फिल्म से समाज प्रभावित होता है ।तो कथाकार की ज़िम्मेदारी होती है कि समाज मे सकारात्मक संदेश प्रेषित करे।

सबसे पहले विषय वस्तु -

यह फ़िल्म घटना और समस्यप्रधान फ़िल्म है विषय वस्तु की बात कर लेते हैं निश्चित रूप से यह फिल्म हिंदुस्तान के इतिहास में ऐतिहासिक फिल्म है ,यह फिल्म आत्मा व विज्ञान का मिश्रण है, कुछ लोग इसे काल्पनिक विज्ञान पर आधारित फिल्म का दर्जा देते हैं, जो बहुत हद तक सही भी है। इस फिल्म को बनाने में निर्माता -अली राजा ,सुभाष चरण ,राजू महा लिंगम ,रहे हैं। इस कहानी को लिखने वाले शंकर और जय मोहन है ,गभग 500 करोड़ रुपयों से ज्यादा की यह फिल्म है।यह हिंदुस्तान की दूसरी सबसे बड़ी फिल्म है ,कहानी कुछ प्रासंगिक ली गई है। **कलाकार** - कास्ट में मुख्य भूमिका के रूप में सुपरस्टार रजनीकांत ,अक्षय कुमार, एमी जैकसन रहे हैं। जिनके अभिनय क्षमता के बारे में यद्यपि कोई राय बनाने की आवश्यकता नहीं है सभी अत्यंत मझे एवम सुलझे हुए कलाकार हैं।

रोबोट के बाद रजनीकांत के चिट्ठी और 2.0 के किरदार में बहुत समानता नहीं थी ,हां निश्चित रूप से अक्षय कुमार का जो किरदार था, पक्षी जगत के लिए अपना सर्वस्व न्योछावर कर देने की सामाजिक पहल को स्वागत करने योग्य है। मोबाइल टावर की वजह से पक्षी जगत खतरे में है ,और शोधात्मक दृष्टि से यह फिल्म एक नई दृष्टि यह भी देता है कि ,मनुष्य बिना पक्षियों के जीवित नहीं रह सकता ,क्योंकि पक्षी जिन कीड़े- मकोड़ों को खाते हैं उनकी संख्या मनुष्यों से कई गुना तीव्र गति से वृद्धि होती है ,यदि पक्षी नहीं होंगे तो उन कीड़े मकोड़ों का आतंक मनुष्य जाति को ही नष्ट कर देगा। कुछ स्वार्थी तत्व अपने आर्थिक स्वार्थ के लिए मोबाइल टावर्स का और मोबाइल से निकलने वाले हानिकारक किरणों को नज़रअंदाज़ करते है ,जिससे पक्षियों को बड़ी संख्या में मौत के घाट उतार रहे है, यह 2.0 का कथ्य है ,कहानी है।

थोड़ी सी तकनीकी की अगर हम बात करें तो ,विज्ञान ने वीएफएक्स तकनीकी का भारी मात्रा में प्रयोग किया है 3D कैमरे के माध्यम से यह फिल्म सीधे ही थिएटर में 3D के रूप में उपस्थित हुई है। 3D कैमरा और वीएफएक्स का भार श्रीनिवास मोहन ने किया है ,जिसने पहले भी बाहुबली में वीएफएक्स का चमत्कार दिखाया था ,

2.0 फ़िल्म का कमज़ोर पक्ष

मुझे इस फिल्म में कमजोर कड़ी के रूप में (1) फ़िल्म की संवाद शैली लगी क्योंकि संवाद शैली किसी भी कहानी की, किसी भी फिल्म की ,गद्य के विभिन्न विधाओं नाटक,एकांकी,कहानी,उपन्यास,आदि का मूल तत्व होता है संवाद शैली फिल्म को जीवंत करता है, यहां तकनीकी प्रयोग के कारण संवाद शैली की मृत्यु हुई है, फ़िल्म में ऐसा कोई डायलॉग निखर कर सामने नहीं आया जिसे दर्शक अपने साथ ज़हन में ले जा सकते थे, जबकि अक्षय कुमार का रोल सकारात्मक और नकारात्मक

दोनों ही था ,वहां बहुत अच्छे संवाद गढ़े जा सकते थे,..

2) दूसरी कमी संगीत की ए. आर.रहमान जैसे संगीत निर्देश को फ़िल्म में जगह देने के बाद भी एक भी गाना नहीं,गीत विहीन फ़िल्म? यह बात फ़िल्म में बहुत आखरी फ़िल्म के अंत मैं गीत का इंतज़ार करता ही रह गय, फ़िल्म के अंत मे गाना देने का औचित्य समझ में नहीं आया।

खैर प्रासंगिकता कि यदि बात करूं मैं तो यह फिल्म पूरी तरीके से खरी उतरती है ,शायद इस फिल्म में पहली बार सम -सामयिक घटना समस्या पर बात करते हुए शोधात्मक दृष्टि से बताया गया कि अमेरिका में ,ष्ठजो दुनिया का सबसे सबसे शक्तिशाली राज्य है.. वहां सिर्फ दो या तीन मोबाइल टावर है ,चीन दुनिया का सबसे बड़ा देश जनसंख्या की दृष्टि से है, वहां भी सिर्फ दो या तीन मोबाइल टावर हैं ,वे अपनी प्रकृति अपने जीव जगत के प्रति बहुत सजग है वही हम भारत के लोग अपने व्यक्तिगत स्वार्थ में पड़कर रूपया कमाने की अंधी दौड़,के कारण हमारे वातावरण को दूषित कर रहे हैं जीवन के आधार पशु-पक्षियों ,पर्यावरण की परवाह किये बिना एक विनाश को न्योता दे रहे है,पक्षी जगत मोबाइल से निकलने वाले दुसित तरंगों से भ्रमित होकर भारी संख्या में अपने प्राण त्याग रहे हैं ,आने वाली पीढ़ियों में इनके दुष्परिणाम दिख जाएंगे ।

यह फिल्म एक साथ 14 भाषाओं में डब की गई है, अगर मैं यह कहूं कि यह फिल्म 1या 2 बार देखा जा सकता हैष्ठयद्यपि किसी भी फ़िल्म को बार बार देखने की इच्छा इसलिए होती है क्योंकि उसमें मन मे व्याप्त सभी 11 के 11 रस समय समय पर कथ्य में गुथे जोते है ..इसमे पूरी फिल्म में मैने सभी रस ढूंढने के प्रयास किया..वीर,वीभत्स,भयानक,थोड़ा श्रृंगार, हास्य, करुणा, आश्चर्य, तो रहा पर वात्सल्य,भक्ति,शान्त का नितांत अभाव रहा..संगीत न होना एक सहृदयी को अखरता रहा। बहरहाल फ़िल्म युवा और किशोर को बहुत उत्तेजित करेगी।

पुस्तक समीक्षा 'निर्भया'

निर्भया-**कविता संग्रह** लेखक : **सुरेश सौरभ**
प्रकाशक : **नमन प्रकाशन, लखनऊ** मूल्य : **50**

'निर्भया' पुस्तक का नाम है या नाम है आक्रोश का? सामने टेबल पर रखी इस पुस्तक को पिछले कई हफ्तों से देख रही हूँ। कई बार पढ़ने को हाथ में लिया, दो मासूम, निश्छल आँखें सामने उग आई। उसकी आंखों में सपने छलक रहे थे। तभी अचानक उन आँखों में निराशा, फिर आक्रोश और फिर खून उतरने लगता है। मैं घबरा कर उसे फिर से टेबल पर रख देती हूँ। जब-जब इस पुस्तक को हाथ में लिया है, ऐसा बार-बार हुआ है। फिर अंततः मैंने मन पर अड़ी डाला और आज पढ़ डाली पूरी किताब।

पैंतालिस कविताओं यानि पैंतालिस विचार पुष्प से अच्छादित पन्ने युक्त इस पुस्तक के लेखक सुरेश सौरभ जी हैं। पत्रिकाओं में अक्सर पढ़ती रहती हूँ आपको। छिटपुट में किसी को पढ़ना और समग्र रूप से किसी लेखक की कृति को पढ़ने में बहुत फर्क है। इस कृति 'निभर्या' के जरिए लेखक वर्तमान हालातों पर अपने चिंतन मनन के विविध आयाम स्थापित करता है। वह लिखता है 'जाने क्यों?' और कहता है सिमरन के मन की बात को। वह लिखता है लड़की के सपने को जो उसे नींद में डराती है। आगे जब बढ़ती हूँ तो 'मेरा गाँव' मन को तरबतर कर देता है।? कच्चे आम की चटनी के ईर्द-गिर्द गाँव की मिट्टी की खुशबू को लयबद्ध करते हुए सौंधी रचना है। यह साधारण लेखक की कलम नहीं है। जिज्ञासावश मैंने तुरंत पुस्तक को पलटते हुए पीछे का कवर देखा। परिचय पढ़ा। मन आदर भाव से भर गया। आपने करीब बारह किताबों पर काम किया है। यह पुस्तक उनकी साधना का प्रतिफल है। यह अपने आप में बहुत बड़ी उपलब्धि है। 'कुछ एहसास' से गुजरी और 'धरातल' पर पहुँची तो पाया कि संवेदनाओं को ढोने वाला आदमी ही कविता का सुख महसूस कर सकता है।

मैं पढ़ रही हूँ 'मियाद' और परख रही हूँ खुद को। पनीली आँखों की टीस-खीज से निकल कर आने वाले विचारों को, उसके अंज़ाम से प्रभावित हूँ। 'कच्चा माल', 'दुकाने', 'भूख', 'तलाश' सबकी अपनी अलग भाव व्यवस्था है। सरल मन की सरस कविताएं मन के अनुकूल है इसलिए सब मोहक हैं। मै शब्दों में, उसमें निहित कथ्य में अपने बुद्धि के सहारे तलाश कर, पोषित कर रही हूँ अपनी सोचने की क्षमता को।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल जी ने लिखा है कि -

'काव्य की उक्ति चाहे कितनी ही अतिरंजित, दूरारूढ़ और उड़ानवाली हो उसका वाच्यार्थ चाहे कितना प्रकरणच्युत व्याहत और असम्भव हो उसकी तह में छुपा हुआ कुछ न कुछ योग्य और बुद्धिग्राह्य अर्थ होना चाहिए। योग्य और बुद्धिग्राह्य अर्थ प्राप्त करने के लिए चाहे कितनी ही मिट्टी, मिट्टी मैं तार्किकों की बुद्धि से कह गया, रसज्ञों और सहृदयों की दृष्टि से सोना या रत्न कहना चाहिए, खोदकर हटानी पड़े, उसे प्राप्त करना चाहिए।'

मैं पन्ने पर दर्ज विचारों को सोना और रत्न जानकर सुरक्षित रख रही हूँ ताकि विवेक जगा रहे और 'निर्भया' काव्य संग्रह की सार्थकता मेरे लिए परिपूर्ण रहें।

यह निश्चित ही एक अच्छी पुस्तक है। इस कृति को मुझे प्राप्त कराने के लिए कवि हृदय सुरेश सौरभ जी का हृदय से आभार प्रकट करती हूँ।?

-सुरेश सौरभ

पुस्तक समीक्षा

शिखर चंद जैन

वाजपेयी - एक राजनेता के अज्ञात पहलू

पुस्तक समीक्षा
पुस्तक - वाजपेयी - एक राजनेता के अज्ञात पहलू
लेखक - उल्लेख एन.पी
अनुवाद - महेंद्र नारायण सिंह यादव
कीमत - रू. 350 मात्र
प्रकाशक - मंजुल पब्लिशिंग हाउस

'भारत के सर्वाधिक लोकप्रिय प्रधानमंत्रियों में से एक पर रोचक पुस्तक' - इस पुस्तक के विषय में वॉल्टर ऐंडरसन ने बिल्कुल सही कहा है। स्वः अटल बिहारी वाजपेयी के राजनीतिक जीवन के साथ-साथ व्यक्तिगत जीवन के बारे में भी बहुत कुछ मिलेगा आपको इस किताब में। भारतीय राजनीति के कई ऐसे क्षणों को विस्तार से व रोचक तरीके से दर्ज किया गया है जिनके बारे में आज तक न कभी अखबार में पढ़ा होगा, न टीवी पर देखा होगा। आडवाणीजी और अटल जी के बीच कैसे मन मुटाव हुआ.एक बार मोदीजी से उनका 36 का आंकड़ा कैसे हो गया था? कभी कभी वे आर एस एस को क्यों नहीं भाते थे? मणिशंकर अय्यर की आँखों की किरकिरी कैसे बन गए वाजपेयी? बिना विवाह किये वे किसके साथ रहते थे? ऐसे ही सैंकड़ों सवालों तमाम उत्सुकताओं के जवाब मिलेंगे इस किताब में।

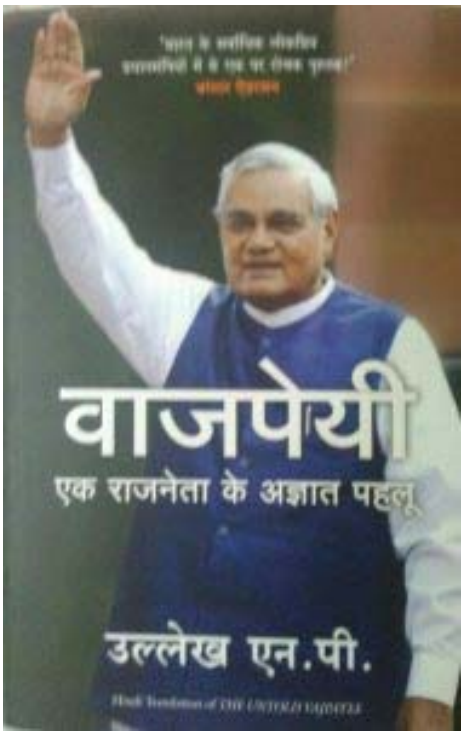

वाजपेयी के कट्टर विरोधी मणिशंकर अय्यर जैसे राजनीतिज्ञ ने भी इस पुस्तक के बारे लिखा है, 'यह गहन शोध के बाद बेहतरीन ढंग से लिखी गई पुस्तक है।' अय्यर ने वाजपेयी के बारे में लिखा है, 'वह संभवतः श्रेष्ठ कांग्रेसी थे, जो इस पार्टी में कभी नहीं रहे।

लेखक ने 'तूफान का सामना' अध्याय में राममंदिर आंदोलन के संदर्भ में लिखा है, 'स्पष्ट रूप से, वाजपेयी को आरएसएस का यह फैसला अच्छा नहीं लगा। भले ही वह बार बार कह चुके थे कि वह पूरी तरह संघ के व्यक्ति हैं, लेकिन उनके तौर तरीके और उनकी सोच समझ कहीं से भी आरएसएस से मेल नहीं खाती थी। वाजपेयी एक अलग ही किस्म के संघी थे, जो मांसाहारी भोजन करते थे। यहां तक कि भैंस का मांस तक खाते थे और उसी तरह, उन्हें व्हिस्की पीना भी पसंद था।'

'इश्क और सिसायत' अध्याय में बताया गया है कि सनतक की पढ़ाई के दौरान अटलजी की मुलाकात राजकुमारी नाम की युवती से हुई, जो उनकी राधा बन गई। दोनों ने विवाह तो नहीं किया लेकिन दोनों में प्यार रहा और दोनों साथ रहे। इन्हीं की बेटी को अटलजी ने गोद लिया। इसी अध्याय में आपको आरएसएस के बुरे दौर की जानकारी भी मिलेगी। पुस्तक में लालकृष्ण आडवाणी और वाजपेयी के बीच खटपट के किस्से भी मिलेंगे।

'सत्ता के साथ प्रयोग' में बताया गया है कि वाजपेयी

के भीतर अघोषित आदर्श राजनेता का दिमाग था। जो किसी आरएसएस के संस्थापक या हिंदू राष्ट्रवादी जैसा नहीं बल्कि पंडित जवाहरलाल नेहरू जैसा था।

वाजपेयी जी की विदेश मामलों पर गहरी पकड़ थी यह बात भी पुस्तक में जगह जगह बताई गई है। जिम्मेदार नेताओं की सम्वेदनशीलता पर भी कई जगह प्रकाश डाला गया है. ऐसे ही एक प्रसंग में वाजपेयी ने बजट के बाद एक भाषण में मनमोहन सिंह की खिंचाई की तो वे नाराज हो गए और इस्तीफे की पेशकश करने लगे। इस पर राव के कहने पर वाजपेयी ने उन्हें शांत किया और इस्तीफा न देने के लिए मना लिया।

गुजरात में मोदी को उन्होंने ही प्रमोट किया लेकिन बाद में उनका नियंत्रण मोदी पर ज्यादा न रहा, यह बात भी इस पुस्तक को पढ़ने पर पता चलती है।पुस्तक को तथ्यों के आधार पर लिखने की कोशिश की गई है। लेखक के निजी विचार न्यूनतम हैं। हां, उन्होंने पाठकों को अपनी चुकाई कीमत की ज्यादा से ज्यादा वसूली हो सके इसके लिए वाजपेयी जी से जुड़ी ऐसे तमाम जानकारियां दी हैं, जो शायद ही इससे पहले कहीं पढ़ीं हों।

पुस्तक में राजकुमारी कौल को उनकी 'जीवन साथी' बताया गया है। वाजपेयीजी के बारे में लिखा है- वाजपेयी उस पीढ़ी के नेता थे जो सदन की कार्यवाहियों को बिना जगह रोकने और अड़ंगा डालने को शर्मनाक मानते थे। वह नेहरूवादी माहौल में पले बढ़े थे और संस्थानों के निर्माण तथा उन्हें सुचारू ढंग से चलाने के लिए दी गई कुर्बानियों की समझ थी।

अंत में जो कुछ लिखा गया है वह वाजपेयी के प्रशंसकों को दिल को छू लेगा। वाजपेयी अंधविश्वासों के खिलाफ थे। लिखा है- यह सच है कि अपने हीरो, नेहरू की तरह वाजपेयी ने कई गलतियां थीं, लेकिन वह जितने बड़े क्रांतिकारी थी, उतने बड़े लोकतांत्रिक व्यक्ति भी थे, और भारतीय राजनीति उन्हें समृद्ध योगदान के बिना निर्धन ही रह जाती।

यकीनन एक शानदार किताब है। उनकी मजबूतियों ही नहीं कमजोरियों पर भी बेबाकी से लिखा गया है।किताब तहलका मचाएगी।

रिपोतार्ज

रचना पाठ गोष्ठी सम्पन्न

तुमने तो दीवार उठा दी आंगन में, इसमें खिड़की-दरवाजा दोनों लाओं- अंसारी

इंदौर। साहित्यिक संस्था 'क्षितिज' एवं 'मातृभाषा उन्नयन संस्थान', इंदौर के संयुक्त तत्वावधान में एक रचना पाठ संगोष्ठी का आयोजन डी क्यू कैफे पर किया गया जिसकी अध्यक्षता वरिष्ठ कवि चरण सिंह अमी के द्वारा की गई। इस गोष्ठी में श्री अजीज अंसारी प्रमुख अतिथि के रूप में एवं कवि श्री आर एस माथुर विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे।

कार्यक्रम में सर्वश्री सूर्यकांत नागर, ब्रजेश कानूनगो, सतीश राठी ,योगेंद्र नाथ शुक्ल, पुरुषोत्तम दुबे, कविता वर्मा ,सदाशिव कौतुक, प्रदीप नवीन, राम मूरत राही, सीमा व्यास, पुष्पा रानी गर्ग, चंद्रा सायता एवं अन्य उपस्थित कवियों के द्वारा रचना पाठ किया गया । कार्यक्रम के प्रारंभ में अतिथियों का स्वागत सर्वश्री उमेश नीमा, दीपक गिरकर एवं डॉ नीना जोशी के द्वारा किया गया तथा अतिथियों को प्रिंस बैरागी ,मृदुल जोशी एवं राम मूरत राही के द्वारा स्मृति चिन्ह प्रदान किए गए ।

कार्यक्रम के प्रारंभ में मातृभाषा उनन्यन संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ अर्पण जैन के द्वारा नवत्रिभाषा सूत्र पर व्याख्यान दिया गया और मातृभाषा के प्रचार-प्रसार तथा हिंदी में हस्ताक्षर किए जाने के बाबत सभी को अपने विचार सुनाए जिसकी सभी ने सराहना की।

कार्यक्रम का संचालन क्षितिज संस्था के अध्यक्ष सतीश राठी के द्वारा किया गया एवं आभार डॉ.अर्पण जैन 'अविचल' ने माना।

रिपोतार्ज

अन्तरा शब्दशक्ति सम्मान 2019 का आयोजन 5 जनवरी को दिल्ली में

दिल्ली। प्रकाशन और हिन्दी भाषा के उत्थान हेतु प्रयासरत अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन द्वारा वार्षिकी का आयोजन 5 जनवरी 2019 को को दिल्ली के एन डी तिवारी भवन में 'अंतरा शब्दशक्ति 2019 सम्मान' दिया जाएगा, जिसमें लगभग 54 साहित्यकार सम्मानित होंगे और उनकी पुस्तकों का विमोचन भी होगा। इसी के साथ 25 लोगों को को मातृभाषा उनन्यन सम्मान से भी नवाजा जाएगा।

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन की संस्थापिका डॉ.प्रीति सुराना के प्रयासों से हिन्दी पुस्तक लेखन को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से यह प्रकल्प और सम्मान देना प्रारंभ किया है। दिल्ली पुस्तक मेले में प्रकाशन का स्टाल होगा जिसमें 80 से अधिक साहित्यकारों को सम्मान के साथ-साथ उनकी निजी पुस्तकों का विमोचन भी होना है ।

- 54 साहित्यकारों को मिलेगा अन्तरा शब्दशक्ति सम्मान 2019
- 25 को मिलेगा मातृभाषा उनन्यन सम्मान
- 80 से अधिक किताबों का भी होगा विमोचन

सम्मान मिलने वालों में शामिल है- ऋतु थपलियाल 'सुदेवस्तु' ,नीरजा मेहता 'कमलिनी' ,डॉ. चेतना उपाध्याय, पूनम(कतरियार),पिंकी परुथी 'अनामिका',प्रीति हर्ष,आरती तिवारी,ब्रजेश शर्मा 'विफल', सुमन चौधरी 'सुमन',दिनेश देहाती,आस्था दीपाली,अनिता मंदिलवार 'सपना',सीता गुप्ता, वसुंधरा राय, उर्मिला मेहता,राजेन्द्र श्रीवास्तव, कृति गुप्ता, अर्चना कटारे, साधना छिरोल्या, अर्चना अनुप्रिया,मनोरमा रतले, सुनीता लुल्ला, डॉ राजलक्ष्मी शिवहरे, विजय कुमार अग्रहरि 'आलोक',कुसुम सिंह 'अविचल', किरण मोर, प्रेरणा परमार,अनुराधा अमरनाथ पान्डे, आशा जाकड़, डॉ सुकेशिनी दीक्षित, अंजलि राकेश पंड्या, मेघा योगी, अरविंद ताम्रकार सपना, हेमंत बोडिया, डॉ नीना जोशी,रेखा कुमार, डॉ भारती वर्मा बौड़ाई,अदिति रूसिया, डॉ ओरीना 'अदा', वंदना दुबे, आरती अर्गल, अलका रागिनी, रेणु चंद्रा माथुर,ज्योति विश्वकर्मा, नमिता दुबे, शीतल प्रसाद खंडेलवाल, विजय लक्ष्मी जांगिड़ 'विजया', वंदना गुप्ता,शुभ्रा झा, माधुरी मिश्रा, मधु तिवारी,डॉ. राजीमती पोकरना, डॉ. हेमा पाण्डेय, मीनाक्षी सुकुमारन। इन सभी रचनाकारों की 32 पृष्ठों की निजी एकल लघु पुस्तिका भी विमोचित होगी।

इसवेे साथ-साथ मातृभाषा.कॉम द्वारा प्रदत्त मातृभाषा उनन्यन सम्मान में डॉ. वासिफ काज़ी, अनिता मंदिलवार सपना, नीरजा मेहता 'कमलिनी', शशिकला व्यास (भोपाल), पूनम (कतरियार), रिखबचन्द राँका 'कल्पेश', डॉ. ऋचा त्रिपाठी, प्रीति हर्ष, आरती तिवारी, धनराज वाणी, वंदना गुप्ता, डी. कुमार 'अजस्र',.नवनीता कटकवार,अशोक महिश्वरे, डॉ. उपासना पाण्डेय, डॉ. भारती वर्मा बौड़ाई, शिखा सिंह भारद्वाज, उर्मिला मेहता, नीता त्रिपाठी, वसुंधरा राय, नरेंद्रपाल जैन, वर्षा अग्रवाल, रिंकल शर्मा, अदिति रूसिया, अंजलि वैद शामिल होंगे। इन सभी रचनाकारों की 16 पृष्ठों की निजी एकल लघु पुस्तिका भी विमोचित होगी।

अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन की एक वर्ष की यात्रा में प्रकाशन द्वारा 200 से अधिक निजी पुस्तकों का प्रकाशन किया है जो विश्व पुस्तक मेला 2019 , दिल्ली में विक्रय हेतु स्टाल पर उपलब्ध भी रहेंगी। प्रकाशन द्वारा लगातार हिंदी के रचनाकारों को लेखन हेतु प्रोत्साहित भी किया जा रहा है और उनके लेखन को प्रकाशित भी किया जा रहा है।

हस्ताक्षर बदलो अभियान

मातृभाषा उन्नयन संस्थान व हिन्दीग्राम द्वारा भारतभर में हस्ताक्षर बदलो अभियान चलाया जा रहा हैं, जिसमे जनमानस को हिन्दी में हस्ताक्षर करने के लिए प्रेरित कर शपथपत्र भरवाएँ जा रहे है। हस्ताक्षर व्यक्ति के जीवन की सबसे छोटी इकाई है, और यदि व्यक्ति हिन्दी में हस्ताक्षर करने की शपथ लेता है तो स्वाभाविक तौर पर धीरे-धीरे उसका हिन्दी से प्रेम होना भी स्वाभाविक है। इसी उद्देश्य को लक्ष्य रखकर वर्ष २०२० तक १ करोड़ भारतीयों को अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करने की प्रेरणा देते हुए शपथ दिलवाई जाएगी। वर्तमान में संस्थान द्वारा देश के ६ राज्यों में इस अभियान को प्रारंभ किया जा चुका है और लगभग ५०००० से ज्यादा लोगों ने शपथपत्र भरकर अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करने की शपथ ली हैं। हस्ताक्षर बदलो अभियान से जुड़ने के लिए देश के राजनैतिक, खेल, रंगकर्मी, चलचित्र अभिनेता-अभिनेत्रियाँ, पत्रकार आदि हस्तियों से भी निवेदन किया जा रहा है। इसी तारतम्य में कई राज्यों में कार्य चल रहा है।

भाषा सारथी बनें

क्या आप 'भाषा सारथी' बनना चाहते हैं? क्योंकि,

- आज हिन्दी को विश्वस्तर पर पहचान दिलाने के लिए हमें हिन्दी का प्रचार-प्रसार करना होगा।
- हस्ताक्षर बदलो अभियान को अपने क्षेत्र में संचालित एवं प्रचारित करना होगा।
- हिन्दी लेखन करने वाले साथियों को रोजगार दिलवाने में मदद करनी होगी।
- हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने के लिए उसे बाजार मूलक भाषा बनानी होगी।
- हिन्दी साहित्य को आमजन तक पहुँचाना होगा।
- हिन्दी के प्रचार हेतु प्रतियोगिताएं, कार्यक्रम आदि का संचालन करना होगा।
- हिन्दी भाषियों की मदद करना होगी।
- हिन्दी ग्राम सभा का आयोजन करना।
- हिन्दी रथ का अपने क्षेत्र में संयोजन करना।
- कार्ययोजना बनाकर लोगो को हिन्दी में हस्ताक्षर करने हेतु प्रेरित करना।

और भी बहुत सी गतिविधियाँ हैं, जो हिन्दी के लिए करनी होगी, यदि आप जुड़कर हिन्दी को आगे लाना चाहते है तो आज ही जुड़े।

सहयोगी इकाईयाँ

मातृभाषा उन्नयन संस्थान — www.matrubhasha.org

मातृभाषा — www.matrubhashaa.com

अन्तरा शब्दशक्ति — www.antrashabdshakti.com

साहित्यकार कोश — www.sahityakarkosh.com

वादीज़ — www.wadieshindi.com

हस्ताक्षर बदलो अभियान

प्रतिज्ञा पत्र

मैं,.....प्रतिज्ञा लेता/लेती हूँ कि आज से राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्यों का निर्वाह करते हुए, राष्ट्र की एकता और अखंडता के हित में स्वयं को समर्पित करते हुए भारतीय संस्कृति और सभ्यता के सम्मान और सुरक्षा हेतु जीवनपर्यन्त तत्पर रहूंगा/रहूंगी। भारत माता और मातृभाषा हिन्दी के सम्मान को सर्वोपरि रखकर अपने हस्ताक्षर हिन्दी में करूँगा/करुँगी।

मैं हिन्दी को राजभाषा से राष्ट्रभाषा का सम्मान दिलाने हेतु आरम्भ किये गए महायज्ञ 'हस्ताक्षर बदलो अभियान' में सतत सहभागी रहूंगा/रहूंगी।

भवदीय,
हस्ताक्षर : .....
नाम : .....
पिता का नाम :.....
पता:.....
.....
संपर्क:.....
अणुडाक (ईमेल):.....

मातृभाषा उन्नयन संस्थान
www.matrubhasha.org

हिन्दी ग्राम
www.hindigram.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

मातृभाषा.कॉम
www.matrubhashaa.com

कार्यालय -
एस-२०७, इंदौर प्रेस क्लब, म. गां. मार्ग, इंदौर
(मध्यप्रदेश) ४५२००१
संपर्क: (का.) ०७३१-४९७७४५५, (दू.) ७०६७४५५४५५
अणुडाक- hindigramweb@gmail.com
अंतरताना- www.matrubhasha.org

भाषा सारथी बनाने के लिए मिस काल करें व अपना परिचय व्हाट्सअप करें

९६६ ९८ ९६६९३
९६६ ९८ ९६६९३

मातृभाषा उन्नयन संस्थान (पंजी.)
हिंदी भाषा के विकास हेतु प्रतिबद्ध
www.matrubhasha.org

हिन्दी में हस्ताक्षर करें, राजभाषा से राष्ट्रभाषा की ओर बढ़ें

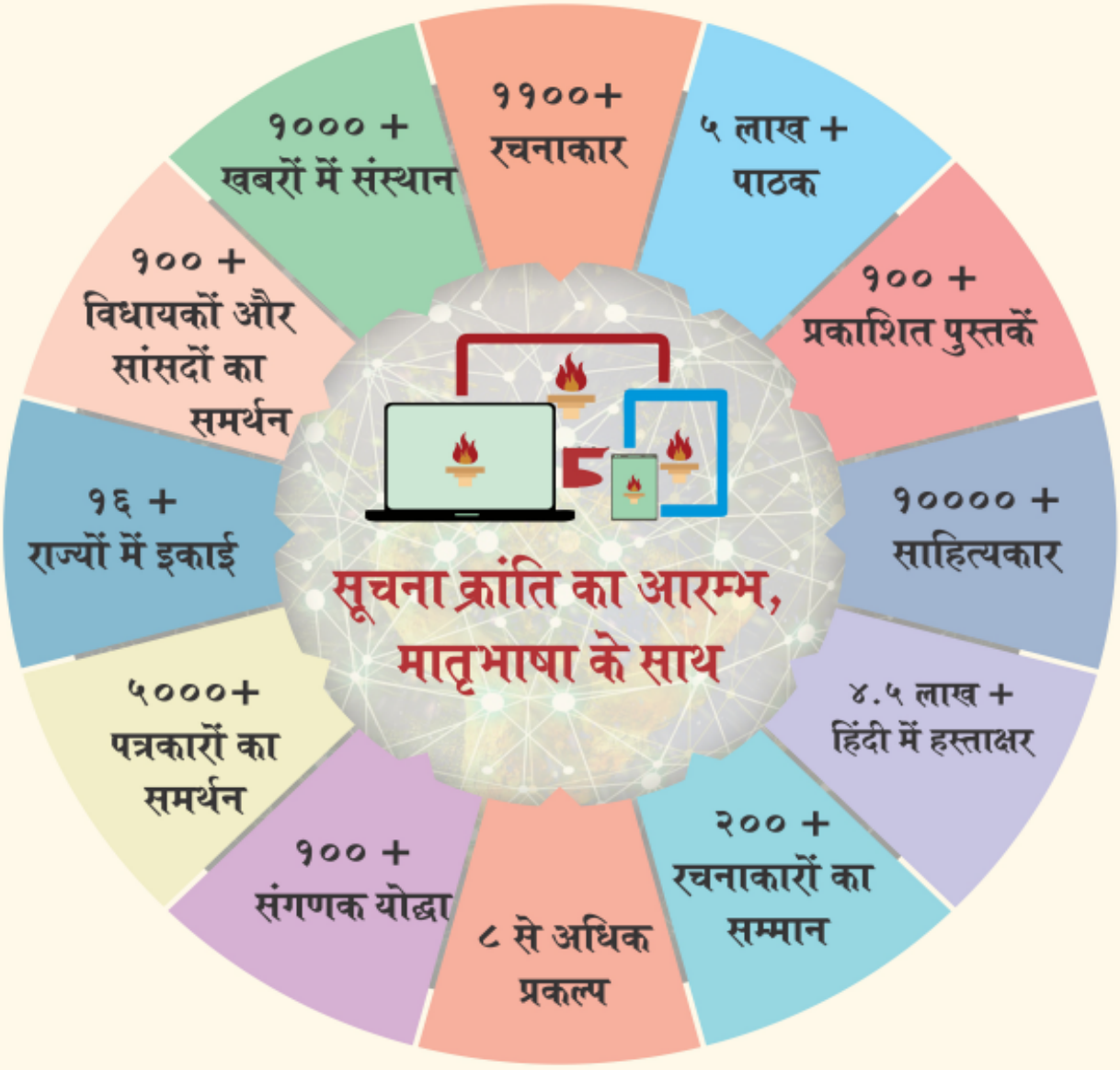

मातृभाषा.कॉम
www.matrubhashaa.com

हिन्दीग्राम
www.hindigram.com

अन्तरा शब्दशक्ति
www.antrashabdshakti.com

साहित्यकार कोश
www.sahityakarkosh.com

खोजें अपने पाठक

१६ पृष्ठ या ३२ पृष्ठ की पुस्तिकाओं से

जी हाँ, वर्तमान दौर में हिंदी के रचनाकारों की समस्या होती है कि उनकी किताबें बिकती नहीं, प्रकाशक भी इसलिए नवांकुरों को प्रकाशित नहीं करते क्योंकि प्रकाशक को भी विक्रय न होने का भय रहता है। ऐसे स्थिति में नवांकुर कैसे खोजे अपने पाठक ?
अंतरा शब्दशक्ति प्रकाशन लाया है अद्भुत विकल्प-मात्र १६ या ३२ पृष्ठ में आपकी रचनाएँ आई एस बी एन (ISBN) क्रमांक के साथ ई-बुक बनवाये, कम प्रतियाँ प्रकाशित करवाएँ और अपने पाठक स्वयं खोजे। जो पाठक की जेब के लिए बोझिल नहीं होगी, और जब आपके पाठकों को आपका लेखन पसंद आएगा तो वे आपकी पुस्तकें भी खरीद कर पढ़ेंगे और इससे आय भी होगी।

- आई एस बी एन
- पाठशोधन
- आवरण अभिकल्प
- ई-बुक
- पुस्तक विमोचन
- प्रचार प्रसार

संपर्क करें
डॉ. प्रीति समकित सुराना
+91- 90094 65259 | +91- 94247 65259
antrashabdshakti@gmail.com
www.antrashabdshakti.com

सेन्स समूह का उपक्रम
अन्तरा शब्दशक्ति